लोक कथाओं में भैंस

चयन और अनुवाद
सुषमा गुप्ता

2022

Cover Title : Lok Kathaon Mein Bhains (Buffalo in Folktales)
Cover Page Picture : Buffalo
Published Under the Auspices of Akhil Bhartiya Sahityalok

E-Mail: hindifolktales@gmail.com
Website: www.sushmajee.com/folktales/index-folktales.htm

Copyrighted by Sushma Gupta 2018
No portion of this book may be reproduced or stored in a retrieval system or transmitted in any form, by any means, mechanical, electronic, photocopying, recording, or otherwise, without written permission from the author.

Map of the World

विंडसर, कैनेडा

2022

Contents

देश विदेश की लोक कथाऐं 5
लोक कथाओं में भैंस 7
1 भैंस धरती पर कैसे आयी 9
2 सफेद कौए ने जानवरों को छिपाया 15
3 भैंस का गीत 27
4 भैंस स्त्री – जादू की कहानी 45
5 नीले निशान वाला आदमी 53
6 भूरे पंखों वाला बड़े साइज़ का आदमी 62

देश विदेश की लोक कथाऐं

लोक कथाऐं किसी भी समाज की संस्कृति का एक अटूट हिस्सा होती हैं। ये संसार को उस समाज के बारे में बताती हैं जिसकी वे लोक कथाऐं हैं। आज से बहुत साल पहले, करीब **100** साल पहले, ये लोक कथाऐं केवल ज़बानी ही कही जातीं थीं और कह सुन कर ही एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को दी जाती थीं इसलिये किसी भी लोक कथा का मूल रूप क्या रहा होगा यह कहना मुश्किल है।

आज हम ऐसी ही कुछ अंग्रेजी और कुछ दूसरी भाषा बोलने वाले देशों की लोक कथाऐं अपने हिन्दी भाषा बोलने वाले समाज तक पहुँचाने का प्रयास कर रहे हैं। इनमें से बहुत सारी लोक कथाऐं हमने अंग्रेजी की किताबों से, कुछ विश्वविद्यालयों में दी गयी थीसेज़ से, और कुछ पत्रिकाओं से ली हैं और कुछ लोगों से सुन कर भी लिखी हैं। अब तक **2500** से अधिक लोक कथाऐं हिन्दी में लिखी जा चुकी हैं। इनमें से **550** से भी अधिक लोक कथाऐं तो केवल अफ्रीका के देशों की ही हैं।

इस बात का विशेष ध्यान रखा गया है कि ये सब लोक कथाऐं हर वह आदमी पढ़ सके जो थोड़ी सी भी हिन्दी पढ़ना जानता हो और उसे समझता हो। ये कथाऐं यहाँ तो सरल भाषा में लिखी गयी है पर इनको हिन्दी में लिखने में कई समस्याऐं आयी है जिनमें से दो समस्याऐं मुख्य हैं।

एक तो यह कि करीब करीब **95** प्रतिशत विदेशी नामों को हिन्दी में लिखना बहुत मुश्किल है चाहे वे आदमियों के हों या फिर जगहों के। दूसरे उनका उच्चारण भी बहुत ही अलग तरीके का होता है। कोई कुछ बोलता है तो कोई कुछ। इसको साफ करने के लिये इस सीरीज़ की सब किताबों में फुटनोट्स में उनको अंग्रेजी में लिख दिया गया हैं ताकि कोई भी उनको अंग्रेजी के शब्दों की सहायता से कहीं भी खोज सके। इसके अलावा और भी बहुत सारे शब्द जो हमारे भारत के लोगों के लिये नये हैं उनको भी फुटनोट्स और चित्रों द्वारा समझाया गया है।

ये सब कथाऐं "देश विदेश की लोक कथाऐं" और "लोक कथाओं की क्लासिक पुस्तकें" नाम की सीरीज के अन्तर्गत छापी जा रही हैं। ये लोक कथाऐं आप सबका मनोरंजन तो करेंगी ही साथ में दूसरे देशों की संस्कृति के बारे में भी जानकारी देंगी। आशा है कि हिन्दी साहित्य जगत में इनका भव्य स्वागत होगा।

सुषमा गुप्ता
2022

लोक कथाओं में भैंस

भैंस ऐसा कोई ख़ास लोकप्रिय जानवर नहीं है जिसके ऊपर कोई पुस्तक लिखी जाये पर उत्तरी अमेरिका के मूल निवासियों की लोक कथाओं में भैंस का एक ख़ास स्थान है। उनकी लोक कथाओं में भैसों की कई लोक कथाऐं कही सुनी जाती हैं। भैसों की लोक कथाऐं कहीं और नहीं मिलतीं।

भैंस गाय की तरह का एक जानवर होता है। भारत में तो इसको ज़्यादातर दूध के लिये इस्तेमाल किया जाता है पर दूसरी जगहों में इसका मॉस के लिये भी इस्तेमाल करते हैं।

तो आओ पढ़ते हैं भैंस की लोक कथाओं का यह संकलन। हमें पूरा विश्वास है कि तुम लोगों को हमारी लोक कथाओं के दूसरे संकलनों की तरह यह संकलन भी पसन्द आयेगा ख़ास कर के इसलिये क्योंकि भैंसों की लोक कथाऐं सिवाय उत्तरी अमेरिका महाद्वीप के और कहीं नहीं मिलती।

1 भैंस धरती पर कैसे आयी[1]

भैंस की इस पहली लोक कथा में यह बताया गया है कि भैंस धरती पर आयी ही कैसे।

शुरू शुरू में सारी भैसें एक बहुत ही ताकतवर कुबड़े आदमी के पास रहा करती थीं। वह उनको एक बाड़े में बन्द रखता था और वह बाड़ा भी सुन जुआन पहाड़[2] के उत्तर की तरफ था।

यह कुबड़ा न तो किसी भैंस को धरती पर भेजता था और न ही उनका मॉस अपने किसी पड़ोसी को खाने के लिये देता था।

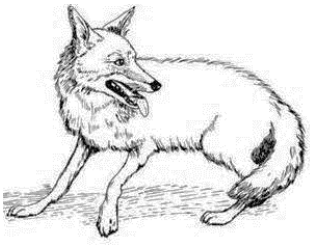

धरती पर कायोटी[3] नाम का एक आदमी रहता था। उसने भी यह महसूस किया कि उस कुबड़े ने सारी भैंसें बन्द कर रखी थीं और वह किसी को अपनी भैंसें नहीं देता था।

एक दिन उसने सोचा कि इस बारे में कुछ करना चाहिये ताकि वह उससे भैंसें निकलवा सके। सो उसने एक मीटिंग बुलायी और लोगों से कहा — "ऐसे तो यह कुबड़ा हम लोगों को कोई भैंस देगा

[1] How the Buffalo Came to Earth? - a folktale of Native American Indians, North America. This story is of American Indians before the Europeans came to America

[2] Sun Juan Mountain

[3] Coyote – pronounced as "Kaayotee" – a small desert wolf, hero of many American Indians' folktales. Read many stories about Coyote in HIndi in my book "Chalak Cayotee", available from hindifolktales@gmail.com

नहीं सो हम लोगों को उसके बाड़े पर जाना चाहिये और उन भैंसों को छुड़ाने की कोई तरकीब करनी चाहिये।"

उन्होंने सबने हॉ में सिर हिलाया और ऐसा सोच कर वे सब एक दिन उस कुबड़े के घर के पास गये और वहीं डेरा डाल दिया।

रात हो जाने पर उन लोगों ने उस बाड़े की खूब जॉच पड़ताल की। उस बाड़े की दीवारें पत्थर की थीं और बहुत ऊॅची थीं। उन्होंने ढूॅढना शुरू किया कि वे लोग उस कुबड़े के घर में कैसे घुसें।

उन्होंने देखा कि वे लोग उसके बाड़े में ऐसे ही नहीं घुस सकते थे उसके बाड़े में केवल उसके घर के पिछले दरवाजे से ही घुसा जा सकता था।

चार दिन के बाद कायोटी ने फिर मीटिंग बुलायी और लोगों से भैंस खोलने के बारे में उनसे सलाह मॉगी। एक आदमी बोला — "कुबड़े के घर में से जाने के अलावा भैंसों के तबेले में जाने का और कोई रास्ता नहीं है और वह कुबड़ा हम सब लोगों से कहीं अधिक ताकतवर है।"

कायोटी बोला — "मेरे दिमाग में एक बात आयी है। हम लोग चार दिन से कुबड़े और उसके बेटे को रोज के काम पर जाते देख रहे है। क्या आप सबने ध्यान दिया है कि उसके बेटे के पास कोई पालतू जानवर नहीं है?"

लोगों की समझ में नहीं आया कि इस बात का भैंसों के छुड़ाने से क्या सम्बन्ध हो सकता है। पर उनको यह मालूम था कि कायोटी

बहुत ही होशियार आदमी था इसलिये वे सब चुपचाप बैठे उसके आगे बोलने का इन्तजार करते रहे।

कायोटी आगे बोला — "मैं एक चिड़िया बन जाऊँगा और कल सुबह जब वह नदी से पानी लाने जायेगा तो उसको एक पंख टूटी चिड़िया मिलेगी। वह उसको पालना चाहेगा सो उसको वह अपने घर ले आयेगा।

और एक बार अगर मैं उसके घर पहुँच गया तो फिर मैं उसके भैंसों के बाड़े में बड़ी आसानी से पहुँच जाऊँगा। वहाँ जा कर मैं खूब शोर मचाऊँगा। चिड़िया का शोर सुन कर सारी भैंसें बाड़े में से रस्सी तुड़ा कर भाग निकलेंगी और वे कुबड़े के घर में से होती हुई धरती की ओर चली जायेंगी।"

जानवरों को कायोटी की यह योजना पसन्द आयी सो कायोटी की योजना के अनुसार अगले दिन जब कुबड़े का बेटा नदी से पानी लेने गया तो उसे एक पंख टूटी चिड़िया दिखायी दे गयी।

वह उसे उठा कर घर ले आया और अपने पिता से बोला — "देखो न पिता जी कितनी सुन्दर चिड़िया है।"

पिता चिल्लाया — "यह चिड़िया किसी काम की नहीं। सारी चिड़ियें, जानवर और आदमी शरारती होते हैं। फेंक दे इसे।"

अपने चेहरे पर कुबड़े ने एक नकली चेहरा पहन रखा था जिसके आँख वाले छेदों में से उसकी आँखें चमक रही थीं। उसके सिर पर बादलों की एक टोकरी रखी थी जो काली रंगी हुई थी।

उसमें पीले रंग की धारियॉ थीं जो बिजली की सूचक थीं। उस टोकरी के दोनों ओर भैसों के सींग निकले हुए थे।

बेटा फिर बोला — "नहीं पिता जी, यह बहुत ही अच्छी चिड़िया है।"

पर उसका पिता फिर चिल्लाया — "नहीं, इसे वहीं छोड़ कर आओ जहॉ से तुम इसको उठा कर लाये हो।"

और वह डरा हुआ लड़का बेचारा उस चिड़िया को वहीं छोड़ आया जहॉ से वह उसे उठा कर लाया था।

तुरन्त ही चिड़िया ने कायोटी का रूप बदला और अपने डेरे पर आ गया। कायोटी आ कर अपने आदमियों से बोला — "मेरी यह योजना तो बेकार हो गयी मगर कोई बात नहीं। मैं कल फिर कोशिश करूँगा। हो सकता है कि एक छोटा जानवर चिड़िया से ज़्यादा अच्छा निकले।"

सो अगले दिन जब कुबड़े का बेटा नदी पर पानी भरने गया तो उसको एक कुत्ते का पिल्ला[4] मिला। कुबड़े के बेटे को वह पिल्ला बहुत पसन्द आया सो वह उसको घर ले आया और अपने पिता से बोला — "देखिये पिता जी, यह पिल्ला कितना सुन्दर है।"

उसके पिता ने उसको फिर डॉटा — "यह सब क्या बेवकूफी है? यह बिल्कुल बेकार है। अगर तुम इसको बाहर छोड़ कर नहीं आओगे तो मैं इसे अपने डंडे से मार दूँगा।"

[4] Translated for the word "Puppy"

पर इस बार कुबड़े का बेटा डरा नहीं। वह कुत्ते को अपने सीने से चिपका कर रोता हुआ घर के बाहर भागने लगा।

उसके पिता को दया आ गयी और वह बोला — "ठीक है ठीक है। पर पहले मुझे यह तो देख लेने दो कि यह कुत्ता ही है या कुछ और है। दुनियॉ के सारे जानवर बहुत चालाक होते हैं।"

यह कहता हुआ वह रसोई घर में गया और एक जलता हुआ कोयला उठा लाया। वह उस कोयले को पिल्ले की ऑखों के पास लाता गया जब तक कि वह पिल्ला तीन बार नहीं भौंका।

अब कुबड़े को विश्वास हो गया कि वह असली कुत्ता था सो वह अपने बेटे से बोला — "यह असली कुत्ता है तुम इसको भैसों वाले बाड़े में रख सकते हो, पर याद रखना इसे घर में नहीं रखना।"

कायोटी यही तो चाहता था। जैसे ही रात हुई और कुबड़ा और उसका बेटा सो गये तो कायोटी ने घर का पिछला दरवाजा खोला और सारी भैंसों में जितनी ज़ोर से भौंक सकता था भौंकता हुआ चारों तरफ को घूम गया।

कुत्ते के भौंकने से सारी भैंसें डर गयीं क्योंकि उन्होंने पहले कभी कुत्ते के भौंकने की आवाज़ ही नहीं सुनी थी।

जब कायोटी उनकी एड़ी में दॉत मारता हुआ इधर से उधर घूमने लगा तो भैंसें रस्सी तुड़ा कर कुबड़े के घर में से होती हुई बाहर भाग निकलीं। भैंसों का बाड़ा खाली हो गया।

कुबड़े का बेटा अपना पिल्ला ढूँढने लगा मगर सारी भैंसों के भाग जाने के बावजूद उसको अपना कुत्ते का पिल्ला नहीं मिला।

"मेरा कुत्ता कहाँ गया?" कह कर वह रोता हुआ अपने कुत्ते को ढूँढने लगा।

कुबड़ा दुखी हो कर बोला — "बेटे, वह कुत्ता नहीं था, वह चालाक कायोटी था। उसी ने हमारी सारी भैंसें भगा लीं हैं।"

इस प्रकार कुबड़े की सारी भैंसें बाड़े में से भाग कर धरती पर फैल गयीं।

2 सफेद कौए ने जानवरों को छिपाया[5]

भैंसों को धरती पर लाने की एक और लोक कथा। यह लोक कथा भी उत्तरी अमेरिका के मूल निवासियों में ही कही सुनी जाती है।

अमेरिका के मैदानों में एक कैम्प था जहॉ के शिकारियों को शिकार ही नहीं मिल पाता था। बहुत सोचने पर भी वे यह नहीं जान सके कि ऐसा क्यों होता है।

असल में जब भी वे कभी बाहर शिकार के लिये निकलते तो सारे शिकार इधर उधर बिखर जाते और ऐसी जगह जा कर छिप जाते जहॉ उनको मारना मुश्किल हो जाता। इससे वे लोग भूखे मरने लगे।

पर इन लोगों को यह पता नहीं था कि वहॉ कोई था जो वहॉ के आस पास के भैंसों और हिरनों को यह कह आता था कि शिकारी लोग आ रहे हैं तुम सब छिप जाओ।

इस कैम्प में एक आदमी ऐसा भी था जो अपने आपको सफेद कौए में बदल सकता था। जब ये शिकारी लोग शिकार के लिये निकलते थे तो वह इधर उधर चला जाता था और सचमुच में ही सारे जानवरों को यह कह आता था कि वे छिप जायें क्योंकि शिकारी शिकार करने के लिये आ रहे हैं।

---

[5] White Crow Hides the Animals – a folktale from Native Americans – Kiowa people. Adapted from the Web Site : http://www.firstpeople.us/FP-Html-Legends/WhiteCrowHidesTheAnimals-Kiowa.html

यह आदमी फिर वापस कैम्प में आ जाता था और अपने आप को आदमी में बदल लेता था।

भूखे लोगों ने शिकार ढूँढने के लिये कई बार अपने कैम्प को कई और दिशाओं में भी लगाया पर यह सफेद कौआ कहीं नहीं गया। वह वहीं रहा जहाँ वह रहता चला आ रहा था।

उसके रहने की जगह के नीचे एक गड्ढा था। सारे भैंसे भी वहीं रहते थे सो उसको अपना खाना वहीं मिल जाता था। जब लोग अपने कैम्पों से लौट कर आते तो उस आदमी को वहीं रहते पाते।

वह आदमी उन लोगों से पूछता — "तुम लोग वापस क्यों आ गये? मेरे पास तो खाना बिल्कुल भी नहीं है। मैं भी उन्हीं परेशानियों का सामना कर रहा हूँ जिन परेशानियों का सामना तुम लोग कर रहे हो। जबसे तुम लोग गये हो मैंने भी खाना नहीं खाया है।"

एक दिन कुछ लोग डंडियों से एक खेल खेल रहे थे कि वह आदमी उनके पास आया। जहाँ वह आदमी खड़ा था उन लोगों को वहाँ से भैंसों की चर्बी की खुशबू आयी।

फिर उन्होंने देखा कि वह आदमी भैंसे की बड़ी सुन्दर खाल पहने था पर उसने उस खाल का नयापन छिपाने के लिये उसको उलटा कर के पहन रखा था। उसके पास एक पूजा की डंडी[6] भी थी जिस पर भैंसे की चर्बी लगी हुई थी।

[6] Translated for the words "Holy Stick"

सफेद कौए वाले आदमी को उनका अपनी तरफ इस तरह से देखना बिल्कुल भी अच्छा नहीं लग रहा था। उन आदमियों को इस तरह से अपनी तरफ देखते हुए देख कर वह आदमी वहॉ से चला गया कि कहीं ऐसा न हो कि वे लोग उससे कोई सवाल पूछ लें।

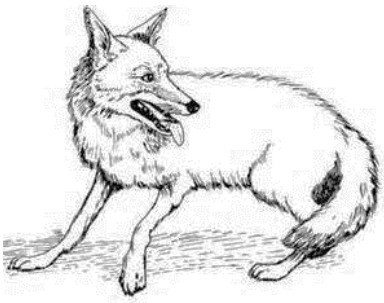

कायोटी[7] भी उसी गॉव में रहता था। उस रात को कायोटी ने उन सब लोगों को बुलाया और उन सबसे कहा कि वह उस सफेद कौए वाले आदमी के घर के चारों तरफ निगाह रखेगा और उन लोगों को यह भी बतायेगा कि उसने उसके बारे में क्या मालूम किया।

सो कायोटी ने कुछ देर तो उस सफेद कौए के घर पर निगाह रखी फिर आ कर उन लोगों को बताया कि उसको दो आदमी चाहिये जिनकी नजर तेज़ हो। सो उल्लू और ड्रैगन फ्लाई[8] दो लोग इस काम के लिये चुने गये।

कायोटी ने उन दोनों को घास पर लेट जाने के लिये कहा और सफेद कौए के ऊपर नजर रखने के लिये कहा कि वह यह देखें कि वह कब आता है, कब जाता है, कहॉ जाता है।

[7] Coyote, pronounced as “Kaayotee”, is a small size desert wolf who is a hero of Native American folktales. See its picture above.

[8] Dragon fly is a kind of fly with large wings. See its picture above.

ड्रैगन फ्लाई ने तो उसको इतना ज़्यादा देखा कि उसकी तो ऑखें ही बाहर निकल आयीं।

उल्लू की ऑखों पर भी इतना ज़ोर पड़ा कि उसकी आखें भी बहुत ज़्यादा बड़ी हो गयीं। पर उल्लू तब तक उसको देखता रहा जब तक कि वह आदमी जमीन के अन्दर नहीं चला गया।

उल्लू ने वापस आ कर कायोटी को बताया कि वह तो जमीन के नीचे चला गया था। तो कायोटी ने लोगों से कहा कि वे अपने सब आदमियों को इकट्ठा करें और यह घोषणा कर दें कि वे अपना कैम्प वहॉ से हटा कर कहीं और लगा रहे हैं।

उसके बाद कायोटी अपने आपको एक कुत्ते के रूप में बदल लेगा और वे लोग उसे वहीं छोड़ जायेंगे। कायोटी ने उनको यह भी बताया कि उस सफेद कौए वाले आदमी की एक बेटी भी थी।

जब सब लोग चले जायेंगे तो उसकी वह बेटी चारों तरफ देखेगी कि कोई पीछे कुछ छोड़ तो नहीं गया और उसे मैं मिल जाऊॅगा। फिर देखना कि क्या होता है।

अगले दिन सब लोग वहॉ से चले गये और कायोटी ने एक कुत्ते का रूप रख लिया पर वह अपने मुॅह पर कुत्ते की मूॅछ लगाना भूल गया। सफेद कौए की छोटी बेटी जब आयी तो उसने उस कुत्ते को देखा। वह कुत्ता उसको बहुत अच्छा लगा और वह उसको अपने घर ले गयी।

जब सफेद कौए वाला आदमी अपने घर आया तो उसने उस कुत्ते को देखना चाहा। उसने देखा कि उस कुत्ते की तो मूँछें हीं नहीं थीं। उसने अपनी बेटी से कहा कि उसको उस कुत्ते से बहुत डर लग रहा था क्योंकि वह कुत्ता नहीं था बल्कि कुत्ते की शक्ल में कोई आदमी था।

उसने अपनी बेटी से उस कुत्ते को बाहर फेंकने के लिये कहा पर वह लड़की उस कुत्ते को रखना चाहती थी इसलिये उसने उस कुत्ते को बाहर फेंकने से इनकार कर दिया।

जब उसका पिता सब जानवरों को शिकारियों के बारे में बताने के लिये चला गया तो उस आदमी की बेटी ने उस कुत्ते को एक मॉस का टुकड़ा खिलाया।

एक दिन जब उसका पिता बाहर गया हुआ था तो उस लड़की ने उस गड्ढे के ऊपर से पत्थर हटाया जिसमें नीचे भैंसें रहती थीं। उसने कुत्ते को उस गड्ढे में नीचे देखने के लिये बुलाया पर कुत्ते ने ऐसा नाटक किया जैसे वह बहुत डर रहा हो।

उसने उसे फिर बुलाया — "यहॉ आओ तो ओ कुत्ते यहॉ देखो हमारे पास क्या है।" जब उसने यह कहा तो कायोटी उस लड़की के पास आया और अचानक उस गड्ढे में कूद गया।

अब उसने अपने आपको एक आदमी के रूप में बदल लिया और भैंसों को वहॉ से हॉकने लगा। वह चिल्लाया — "जाओ और जा कर सारी दुनियॉ में फैल जाओ।"

भैंसें तुरन्त ही एक नदी की तरह उस गड्ढे में से बाहर निकल आयीं और चारों तरफ दौड़ गयीं।

कायोटी फिर एक छोटा कीड़ा बन गया और आखिरी भैंस की पूँछ से चिपक गया और इस तरह वह भी उस गड्ढे से बाहर निकल गया।

वह लड़की एक डंडा लिये बाहर खड़ी उस कुत्ते का इन्तजार कर रही थी कि कब वह कुत्ता बाहर निकले पर उसको तो कोई कुत्ता दिखायी ही नहीं दिया।

वह भैंस भी उस लड़की के पास से गुजर गयी जिसकी पूँछ पर कायोटी कीड़ा बना चिपका हुआ था पर उसको कुत्ता कहीं दिखायी नहीं दिया।

जब सारी भैंसें उस सफेद कौए के घर से निकल गयीं और उसके घर से काफी दूर आगे तक निकल गयीं तो कायोटी फिर से आदमी बन गया और भैंसों को चिल्लाया — "फैल जाओ, फैल जाओ, चारों तरफ फैल जाओ।"

जब सफेद कौआ अपने घर लौट कर आया और देखा कि उसके पीछे क्या हो गया है तो उसने अपनी बेटी से कहा — "देखो न तुमने क्या कर दिया है। मुझे पहले से ही डर था कि ऐसा कुछ होगा। अब हम लोगों को बहुत परेशानी होगी।"

उधर कायोटी अपने लोगों में लौट आया और फिर से उन लोगों ने भैसों को खाना शुरू कर दिया।

इस बात से सफेद कौआ बहुत गुस्सा हो गया। उसने फिर से भैसों और दूसरे जानवरों को शिकारियों से दूर भगा दिया। इससे शिकारी लोग फिर से भूखे रहने लगे।

सफेद कौआ उन लोगों को यह बताना चाहता था कि वह उन लोगों की ज़िन्दगी में और भी मुश्किल पैदा कर देना चाहता था सो वह उनके कैम्प के ऊपर से यह कहते हुए उड़ा — "मैं तुम लोगों को यह बताना चाहता हूँ कि मैंने ही भैंसों को तुम्हारा शिकार होने से बचा कर रखा था। तुम लोग अब किसी मॉस वाले जानवर को नहीं मार पाओगे।"

उस रात कायोटी ने फिर से अपने लोगों को बुलाया और एक तरकीब सुझायी। उसने कहा कि उस तरकीब को उनको वैसे ही मानना पड़ेगा जैसा कि वह बतायेगा।

वे अपने कैम्प में यह घोषणा करेंगे कि वे कुछ घाटी दूर के एक जंगल में जा रहे हैं। कायोटी एक हिरन का रूप रख लेगा और एक बड़ी सी झाड़ी में छिप जायेगा जहॉ सफेद कौआ उसको न देख सके।

जब वे लोग वहॉ से जायेंगे तो वे उसको मार देंगे पर वे उसका ढॉचा और उसके सीगों के साथ उसका सिर वहीं छोड़ जायेंगे। उसके बाद वह देख लेगा।

सो अगले दिन लोग उसी जंगल में चले गये जहॉ कायोटी ने उनको जाने के लिये कहा था। कुछ लोग शिकार की खोज में चले गये। एक शिकारी उस हिरन की खोज में चला गया।

उस शिकारी ने हिरन को ढूँढ लिया और मार दिया। उन्होंने उस हिरन को उसी तरह से काट दिया जैसा कि कायोटी ने उनको काटने के लिये बताया था।

जब शिकारी लोग उस हिरन का पीछा कर रहे थे तो सफेद कौआ हिरन के ऊपर से उड़ा और बोला — "मुझे आश्चर्य है कि मैंने तुमको कैसे छोड़ दिया।

मुझे तुमसे भी यह कह देना चाहिये था कि शिकारी आ रहे हैं तुम छिप जाओ। यह मेरी ही गलती है। पर तुम तो खूब तेज़ भाग सकते हो तुम अभी भी भाग जाओ। शिकारी आ रहे हैं।"

जब शिकारी चले गये तो उस आदमी ने उस हिरन का केवल ढॉचा ही पाया। उसने उसके सींगों को आग लगायी और अपने मन में सोचा — "मुझे मालूम है कि यह हिरन नहीं है। मुझे यह भी मालूम है कि कायोटी ने पहले मेरे साथ क्या किया था।

और यह भी कायोटी ही है जो फिर से वेश बदल कर आया है। मैं इसको अपने आप ही जॉचूँगा।"

यह सोच कर वह उस हिरन के सिर पर खड़ा हो गया और उस हिरन की नाक को अपनी तेज चोंच से मारना शुरू किया और

बोलता रहा — "मुझे मालूम है कि तुम कायोटी हो, मुझे मालूम है कि तुम कायोटी हो।"

वह उसको मारता ही रहा मारता ही रहा। वह बस तब ही रुका जब कायोटी रोने वाला हो रहा था।

उस आदमी ने सोचा अब मैं इसको दूसरी तरफ मारता हूँ सो वह पीछे की तरफ चला और उसकी पीछे वाली टॉग के घुटने पर अपनी चोंच से मारना शुरू किया।

इस बार भी वह उसे तब तक मारता रहा जब तक वह बस चिल्लाने ही वाला था।

सफेद कौए ने फिर सोचा — "तुम हिरन हो सकते हो पर मुझे आश्चर्य है कि मैंने तुमको छोड़ कैसे दिया।"

फिर उसने उसकी पसलियों से उसका बचा हुआ मॉस निकालने की सोची। सो जब उसने उसकी पसलियों में अपना सिर घुसाया तो कोयोटे ने अपनी पसलियॉ बन्द कर लीं और सफेद कौए को पकड़ लिया।

फिर कायोटी आदमी के रूप में बदल गया और बोला — "आज मैंने तुमको पकड़ लिया है।"

सफेद कौआ बोला — "कायोटी, मेहरबानी कर के मुझे छोड़ दो। मैं फिर कभी कोई बुरा काम नहीं करूँगा। मैं सबके साथ भलाई करूँगा। मेहरबानी कर के मुझे छोड़ दो।"

आदमी लोग उन दोनों को दूर से देख रहे थे। जब उन्होंने देखा कि कायोटी ने सफेद कौए को पकड़ लिया है तो वे खुशी से चिल्लाने लगे।

कायोटी सफेद कौए से फिर बोला — "अब जब मैंने तुमको पकड़ लिया है तो अब मैं तुमको कैम्प ले जाऊँगा और अब कैम्प वाले लोग ही तुम्हारे साथ जो वे चाहेंगे वह करेंगे।" सो वह उसको कैम्प ले गया।

वहाँ आदमियों ने कहा — "यही है वह जिसने हमें इतना तंग किया है और भूखा रखा है। पर अब जब यह हमारे पास है तो हम इसका क्या करें?"

एक बूढ़ी मकड़ी बोली — "इसको मुझे दे दो। मैं इसको देखना चाहती हूँ जिसने हम सबको भूखा मारा है।"

जब उस बूढ़ी मकड़ी ने सफेद कौए को पकड़ा तो वह तुरन्त ही उसके चारों तरफ जाला बुनने लगी। कोई इस बात को देख ही नहीं पाया कि वह बूढ़ी मकड़ी क्या कर रही थी।

जब वह बूढ़ी मकड़ी जाला बुन रही थी तो वह सफेद कौआ उसका जाल तुड़ा कर हवा में उड़ गया। उसने कैम्प का एक चक्कर लगाया और हँसते हुए बोला — "इस बार मैं तुम लोगों के ऊपर कोई दया नहीं दिखाऊँगा और तुम लोगों को वाकई में भूखा मारूँगा।"

कायोटी ने उस बूढ़ी मकड़ी से कहा — "मैं लोगों से कह दूँगा कि वह इस सफेद कौए को छोड़ देने के बदले में तुमको मार दें।"

बूढ़ी मकड़ी बोली — "यह सफेद कौआ नहीं जानता कि यह क्या कह रहा है। मैं पकड़ती हूँ उसे।"

कह कर उसने सफेद कौए को अपनी तरफ खींचना शुरू किया जैसे वह उसे किसी डोरी से खींच रही हो।

सफेद कौआ चिल्लाया — "अरे मैं तो मजाक कर रहा था। मैं आगे से सबसे ठीक से बरताव करूँगा। मुझ पर दया करो।"

पर वह बूढ़ी मकड़ी उसको खींचती गयी खींचती गयी जब तक कि वह सफेद कौआ उसके हाथ में नहीं आ गया।

फिर उसने उस कौए को कायोटी को दे दिया और बोली — "अब जैसा तुम इसके साथ करना चाहते हो वैसा करो।"

कायोटी ने लोगों को बुलाया और आग जलाने वाली लकड़ी लाने के लिये कहा। फिर उसने उस लकड़ी में आग लगायी और उस सफेद कौए को उस आग में डाल दिया और तब तक जलने दिया जब तक कि वह जल कर बिल्कुल काला नहीं हो गया।

फिर कायोटी उस सफेद कौए से बोला — "मैं अब ऐसा कुछ करने वाला हूँ ताकि तुम फिर अपनी मनमानी न कर सको। तुम आज से चिड़िया बन जाओ और खाने के टुकड़े ढूँढते फिरो और हर चीज़ से डरो।"

सो फिर उस कौए का यही हाल हुआ। वह काला हो गया, वह चिड़िया हो गया और अब वह खाने के टुकड़ों के लिये इधर उधर मारा मारा फिरता है।

3 भैंस का गीत[9]

भैंसों की यह लोक कथा उत्तरी अमेरिका महाद्वीप के आदिवासियों में कही जाने वाली एक बड़ी लोकप्रिय लोक कथाओं से ली गयी है। यह लोक कथा भी कुछ ऐसी ही है जैसी कि भैंस[10] धरती पर कैसे आयी।

यह बहुत बहुत बहुत पहले की बात है जब धरती पर भैंस नहीं हुआ करती थी। भैंस ऊपर आसमान से धरती पर देखती और देखती कि लोग बहुत दुखी हैं।

सो उसने उपर से गाया — "मैं धरती पर जाऊँगी और लोगों की ज़िन्दगी बदल दूँगी।" उसके ये शब्द जब धरती पर रहने वाले लोगों ने सुने तो वे बहुत खुश हो गये।

यह कह कर वह भैंस एक पगडंडी पर भागी जो एक पहाड़ी की चोटी पर जाती थी। पहाड़ी की चोटी पर पहुँच कर वह वहाँ से बहुत नीचे कूद पड़ी।

लोग उसको देखने आये पर वह तो मर चुकी थी। वे बोले — "हमारी माँऐं ठीक ही कहती थीं कि यहाँ हमारे लिये खाना है।"

---

[9] Buffalo Song – a story of from traditional Salish, Native Americans, North America.
Adapted from the book "Buffalo Song", by Joseph Bruchak. NY, Lee & Low Books Inc. 2013. 36 pages unnumbered. A 1-story Children's Book with pictures.
[The book says that this is a real story. Samuel Walking Coyote passed on in 1897 and Mary in 1901. The Pablo-Allard herd continue to grow. Walking Coyote is not the only one credited with helping to save the buffalo from extinction.]

[10] Translated for the word "Sun Buffalo Cow" – that is what a buffalo is called by Native Americans

उसके बाद उन्होंने कुछ खुरों की आवाजें आती सुनी जैसे बिजली आसमान में कड़कती चली जाती है। उन्होंने देखा कि सारी धरती तो भैंसों से भर गयी है... ।

यह **1873** की बात है। वह दिन एक बुरा दिन था। भैंस की एक कटिया[11] ने एक घाटी के घास के मैदान में अपनी मॉ के शरीर से अपनी नाक रगड़ी। लोग वहॉ से अपनी अपनी गाड़ियॉ ले ले कर चले गये थे और उनके साथ ही चली गयी थीं बादल के गरजने की आवाजें भी।

जानवरों के उस छोटे से झुंड में और दूसरे जानवर जमीन पर उस कटिया के चारों तरफ चुपचाप पड़े हुए थे। पहाड़ में जहॉ वे रहते थे वह जगह उनकी हिफाजत नहीं कर पायी थी।

शिकारी लोग उन भैसों की केवल जीभ ही काट कर ले गये थे जिनको उन्होंने मारा था।

भैंस की यह कटिया एक ऐसी जगह से आयी थी जहॉ वह छिपे तौर पर रह रही थी। उसकी मॉ उस भैंस के झुंड में सबसे बड़ी भैंस थी। एक वही थी जो झुंड को खतरे से बचाती थी और वही आज मर गयी थी।

[11] Some people in India call buffalo's daughter a "Katiyaa" and their son a "Kataraa". Bachhiyaa and Bachhadaa are normally called the cow's children.

उस कटिया ने फिर से अपनी मॉ को हिलाया पर वह तो हिली नहीं। रात हो गयी थी सो वह कटिया अपनी मॉ की ठंडी तरफ सिकुड़ कर बैठ गयी।

सूरज दो बार निकला और दो बार डूब चुका था कि एक घोड़ा दो नैज़ पर्स[12] सवारों को ले कर उस घाटी में आया। एक सवार बड़ा था और दूसरा उसका बेटा।

अप्पालूसा[13] घोड़े के खुरों की पत्थर के ऊपर आवाज नहीं होती थी क्योंकि उसके पैरों में सफेद आदमी[14] के घोड़ों की तरह लोहे की नाल नहीं ठोकी जाती थी।

लड़के ने अपने पिता के पीछे से चारों तरफ देखा तो जो कुछ उसने देखा उसे देख कर उसको आश्चर्य तो नहीं हुआ पर वह दुखी हो गया।

तभी भैंस की कटिया ने अपना सिर उठाया। वह भूख से इतनी कमजोर थी कि वह न तो खड़ी ही हो सकी और न वहॉ से भाग ही सकी। वह लड़का घोड़े से नीचे कूदा और उस कटिया की तरफ भागा और उसके सिर को अपनी गोद में ले कर झुलाने लगा।

---

[12] Nez Perce is an area in the North-Western part of USA whose people were called Nez Perce – Native Americans. See his picture above.

[13] A kind of horse. See his picture above.

[14] Translated for the word “White Man” – white men were called those people whocame from Europe after the Americas were discovered in late 15th century.

वह बोला — "ओह, यह तो अभी तक ज़िन्दा है। पिता जी, क्या हम इसकी कुछ सहायता कर सकते हैं?"

लड़के का पिता भी जिसका नाम था "दो हंस" घोड़े पर से नीचे उतर आया।

उसने घोड़े की लगाम जमीन पर ही छोड़ दी और अपने बेटे के कन्धे पर हाथ रख कर बोला — "लाल ऐल्क[15], इतने छोटे बच्चे को बहुत देखभाल की जरूरत होती है। हम लोगों को बहुत दूर जाना है और यह कटिया हमारे साथ सफर करने के लिये बहुत कमजोर है।"

लाल ऐल्क ने अपने पिता की तरफ ऐसे देखा जैसे कह रहा हो कि पिता जी इसको अपने साथ ले चलिये न।

दो हंस मुस्कुराया और बोला — "अच्छा ठीक है मेरे बेटे। हम इसको यहॉ नहीं छोड़ेगे। मेरा यहॉ एक दोस्त है जो यहीं पास में ही रहता है। वह ऐसे बे मॉ बाप वाले भैंसों के बच्चों को इकट्ठा करता रहा है ताकि वह इन भैंसों की सहायता कर सके।

वह यह सोचता है कि अगर वह इनकी सहायता करेगा तो उसके बच्चों के नाती पोते मैदानों में घूमते हुए इन भैंसों के खुरों की आवाज फिर से सुन पायेंगे। उसका नाम है "चलता हुआ

[15] Red Elk – was that boy's name

कायोटी"[16]। वह इस छोटे से बच्चे को देख कर बहुत खुश होगा।"

यह कह कर दो हंस ने अपनी बॉह उस कटिया के नीचे को लगायी और उसको उठा कर अपने घोड़े की तरफ ले गया। जब तक उसने उस कटिया को घोड़े की पीठ पर रखा और वह खुद भी उसके ऊपर चढ़ा तब तक वह घोड़ा चुपचाप खड़ा रहा।

लाल ऐल्क अपने पिता के पीछे बैठ गया और वे पश्चिम की तरफ के पहाड़ की तरफ जिधर सूरज छिपता था चल दिये।

सूरज बीच आसमान में ही था जब दो हंस और लाल ऐल्क एक कैम्प में पहुॅचे जो पहाड़ की चोटी के साये में लगा हुआ था। दूसरी भैंसों की गन्ध कटिया की नाक में पहुॅची तो वह अपना सिर उठाने और इधर उधर देखने के लिये कुलमुलायी।

अपने बेटे की सहायता से दो हंस ने उस कटिया को घोड़े से उतारा और उसको उसके कॉपते हुई टॉगों पर खड़ा किया। वहॉ भैंसों का एक बाड़ा था जिसकी दीवार पत्तियों और डंडों को साथ साथ बॉध कर बनायी गयी थी। उसमें भैंसों के और भी कटरे और कटिया थे।

एक आदमी ने जो उस बाड़े के दरवाजे पर खड़ा हुआ था उन लोगों का स्वागत करने के लिये अपना हाथ हिलाया।

[16] Translated for the words "Walking Coyote" – Coyote is a small desert wolf. It is pronounced as Kaa-yo-tee. Read many stories of Coyote in "Chalak Coyote" written by Sushma Gupta in Hindi available from hindifolktales@gmail.com

उस बाड़े के पीछे एक छोटा सा घर था जहॉ एक स्त्री और एक चौदह पन्द्रह साल का लड़का आग के ऊपर अपना दोपहर का खाना बना रहे थे। आदमी तो आगे बढ़ा पर वे स्त्री और लड़का वहीं बैठे रहे।

आदमी बोला — "आओ दो हंस, आज तुमको यहॉ देख कर बहुत अच्छा लगा।"

दो हंस भी बोला — "ओ चलते हुए कायोटी, मेरे पुराने दोस्त, मुझे भी तुमसे मिल कर बहुत अच्छा लग रहा है।"

फिर उसने चलते हुए कायोटी का हाथ पकड़ लिया और बोला — "मेरे बेटे ने तुम्हारे लिये तुम्हारे इस परिवार को बढ़ाने के लिये एक और बिन मॉ बाप का बच्चा पा लिया है। शिकारियों ने इसके झुंड को देख लिया था तो बाकी सबको तो उन्होंने मार दिया अब बस यही अकेली बची है।"

चलता हुआ कायोटी उस कटिया की तरफ आगे बढ़ा तो कटिया ने अपना सिर झुका लिया और इनकार में अपना खुर पटका पर कटिया के पैर अभी बहुत कमजोर थे सो वह कॉप गयी।

केवल लाल ऐल्क की उसको पकड़ने की कोशिश ने उस कटिया को गिरने से बचा लिया। चलते हुए कायोटी ने अपना बॉया हाथ उस कटिया को सहलाने के लिये आगे बढ़ाया।

जैसे ही उसने अपना हाथ आगे बढ़ाया तो लाल ऐल्क ने उसके हाथ में भैंस के पूँछ के बालों की चोटी की तरह गूँथा हुआ एक ब्रेसलैट[17] पड़ा देखा।

चलता हुआ कायोटी बोला — "ओ मेरे छोटे दोस्त, जब मैं चार साल का था तब मैंने अपना पहला भैंसों का झुंड देखा था।

मैं अपने चाचा के साथ घोड़े पर चढ़ा चला जा रहा था कि मैं सिन्येलेमिन[18] में इन पहाड़ों के उस पार की घाटी में आ पहुँचा।

उस समय सारी धरती भैंसों से काली हुई रहती थी। एक कोने से ले कर दूसरे कोने तक भैंसे हीं भैंसें थीं। यह करीब तीस साल पहले की बात है। तुमने ऐसा कभी देखा है क्या?"

लाल ऐल्क ने ना में सिर हिलाया।

चलता हुआ कायोटी फिर बोला — "अपनी ज़िन्दगी में यह जो कुछ भी मैंने देखा उनमें वह सबसे अच्छी चीज़ थी। मैं तो उसको कभी भूल ही नहीं सकता।"

फिर उसने अपना वह भैंस की पूँछ के बालों वाला ब्रेसलैट अपनी कलाई से निकाला और लड़के के हाथ पर रख दिया और बोला — "यह तुमको वह याद दिलाने के लिये है जो मैंने देखा था।"

---

[17] Bracelet – a lose or tight bangle type ornament to be worn on wrists. It can be made of anything, from thread to gold. In Northern India people normally wear it made of gold – men in the form of a chain and women set it with precious stone (called Dastee in Hindi)

[18] Sinyelemin

लाल ऐल्क को उसको धन्यवाद देने की कोई जरूरत नहीं थी। चलते हुए कायोटी को पता था कि उसके दिल में क्या था। लाल ऐल्क अपने पिता के पास वापस आ गया।

पिता ने अपने बेटे को अपने पीछे घोड़े पर बिठाने के लिये ऊपर खींचा और वे बिना पीछे देखे आगे चले गये।

चलते हुए कायोटी ने कटिया को उठाया और उसको भैंसों के बाड़े में ले गया। वह उसके हाथों से छूटने के लिये कुलमुलाती रही जब तक उसने यह गाना नहीं गाया —

हेचा हे, हेचा हो, हेचा हे ये हो

उसके बाद उसने उसको भैंसों के बाड़े में धीरे से उसके पैरों पर खड़ा कर दिया। वह उसके शरीर से लग कर खड़ी हो गयी और हलके हलके अपने पैरों को जमीन पर मारने लगी।

चलता हुए कायोटी बोला — "तुम तो बहुत बहादुर हो ओ मेरी छोटी बिजली की सी कड़क के खुर वाली[19]। तुम्हारी भैंसों ने ही तो मेरे लोगों को ज़िन्दा रखा है। तुमने हमको खाना दिया और शरण दी। अब यह हमारी बारी है कि हम तुम्हारी सहायता करें।

मैं तुमको और इन भैंसों को पहाड़ों के उस पार ले जा रहा हूँ। वहाँ काले कपड़े वाले फादर रहते हैं जो सेन्ट इगनेशियस मिशन के कैथोलिक पादरी[20] हैं।

[19] Translated for the words "Little Thunder Hoof"

[20] Black Robe Fathers priests at St Ignatius Mission

उनके पास बहुत अच्छे अच्छे घास के मैदान हैं। वे हमारी आत्मा की देखभाल करते हैं सो यकीनन वे तुम्हारी भी देखभाल करेंगे जो हमारी आत्मा को ताकतवर बनाते हैं।

तभी चलते हुए कायोटी की पत्नी एक कटोरा ले आयी और उसको छोटी बिजली की कड़क के खुर वाली के सामने रख दिया।

चलते हुए कायोटी ने कटिया से कहा — "यह मेरी पत्नी है मैरी। तुमको इसका धन्यवाद करना चाहिये क्योंकि यह इसी का विचार था। मैरी, इसको बताओ कि तुमने मुझसे क्या कहा था।"

मैरी मुस्कुरायी और अपने पति की तरफ देख कर बोली — "हमारे सैलिश[21] लोग जो भैंस को बहुत प्यार करते हैं उनका प्यार बहुत जल्दी ही चला जायेगा। हम सब इसी वजह से बहुत दुखी थे।

तो मैंने कहा कि तुम उन सब कटरे कटियों को पकड़ो जिनको तुम पकड़ सकते हो और उनको हमारे लोगों के पास ले जाओ। जब वे उन भैंसों को देखेंगे तो बहुत खुश होंगे।"

तभी उनका बेटा वहॉ आ गया और उस कटिया के बराबर में आ कर खड़ा हो गया तो चलते हुए कायोटी ने उसका परिचय कराया — "यह मेरा बेटा है कम्बल बाज़[22]।"

[21] Salish people – a tribe of Native Indians

[22] Translated for the words "Blanket Hawk"

कम्बल बाज़ ने बड़े मुलायम हाथों से कटिया की नाक को थोड़ा नीचे की तरफ कटोरे की तरफ किया जिसमें कुछ जड़ें मिला हुआ पतला सा दलिया था। जैसे ही खाने की खुशबू कटिया के नथुनों में पहुँची तो उसने अपना मुँह नीचे किया और उसे खाना शुरू कर दिया।

चलते हुए कायोटी ने देखा और हॉ में सिर हिलाया और बोला — "जब तक यहॉ के दर्रों से बर्फ हटेगी तब तक तुम पहाड़ों पर जाने के लायक हो जाओगी।"

सूरज कई बार उगा और कई बार डूबा यानी समय गुजरता गया और छोटी बिजली की कड़क के खुर वाली कटिया बड़ी और मजबूत होती गयी और दूसरे बछड़े बछियों के साथ खेलने लगी।

जब चलते हुए कायोटी, मैरी और कम्बल बाज़ उन सब भैंसों को आपस में अपने सिर टकराते और एक दूसरे का पीछा करते देखते तो उनको विश्वास हो गया कि अब छोटी बिजली की कड़क के खुर वाली कटिया उनके भैंसों के झुंड की लीडर बन गयी है।

सारे कटरे और कटियें उन तीनों आदमियों को जो उनकी देखभाल कर रहे थे अच्छी तरह जानते थे और उन पर विश्वास भी करते थे पर वे जब बुलाते थे तो वे तब तक नहीं आते थे जब तक कि छोटी बिजली की कड़क के खुर वाली बछिया उनको ले कर नहीं जाती थी।

एक दिन चलते हुए कायोटी ने छोटी बिजली की कड़क के खुर वाली कटिया से कहा — "ओ छोटी बिजली की कड़क के खुर वाली कटिया, यह बहुत अच्छा है कि तुम अपने झुंड की लीडर बन गयी हो।

हमको इन सबको पहाड़ के उस पार ले जाने में तुम्हारी सहायता की जरूरत पड़ेगी। पर वह कोई आसान सफर नहीं होगा।"

जब आधी गर्मियॉ बीत गयीं और जब भैंसों ने अपने जाड़ों वाले बाल गिरा दिये तब और बहुत सारे भैंसों के कटरे और कटियें वहॉ लाये गये। वह छोटा सा झुंड अब नौ कटिये कटरों का हो गया था – पॉच कटरों का और चार कटियों का।

एक दिन सुबह सुबह चलते हुए कायोटी ने पहले ऊपर की तरफ ऊॅचे ऊॅचे पहाड़ों की तरफ देखा और फिर उस भैंसों के झुंड की तरफ देखा जो अब तक भैंसों के बाड़े के किनारे तक आ गया था।

फिर वह उनसे बोला — "दोस्तों, आज का दिन सफर के लिये बहुत ही अच्छा दिन है। हम लोग आज ही चलेंगे।"

तभी कम्बल बाज़ भी बाड़े के पास आ गया और उसने छोटी बिजली की कड़क के खुर वाली बछिया की नाक सहलाने के लिये अपना हाथ बढ़ाया और बोला — "मैं तुम्हारे लिये आगे जा कर रास्ता देख आया हूॅ। मुझे पता चल गया है कि रास्ता बहुत अच्छा है।

मैंने तुम्हारे लिये पीने का पानी भी ढूँढ लिया है और खाने के लिये घास भी, और ऐसी जगहें भी जहाँ तुम रात को आराम कर सकती हो।"

मैरी हँसी और बोली — "अगर तुम दोनों इन कटरे कटियों से ऐसे ही बातें करते रहोगे तो हम लोगों को लौटने में रात हो जायेगी इसलिये अब हमको चलना चाहिये।"

मैरी ने बाड़े के दरवाजे का किवाड़ खोला और छोटी बिजली की कड़क के खुर वाली के पीछे पीछे सब कटरे और कटियें भी उस बाड़े में से निकल आये और वे सब उन आदमियों के पीछे पीछे पहाड़ के ऊपर की तरफ चल दिये।

रास्ता मुश्किल था। कहीं कहीं उनको पानी के नालों में से हो कर भी जाना पड़ा तो कहीं कहीं गिरे हुए पेड़ों को भी लाँघना पड़ा।

चलते हुए कायोटी और मैरी को छोटे कटरों को या तो गोद में उठा कर चलना पड़ा या फिर जब वे उनको गोद में ले जाते हुए थक गये तो उनको घोड़ों के ऊपर थैलों में लाद कर ले जाना पड़ा।

रात को सोने के लिये जब उन्होंने कैम्प लगाया तो चलते हुए कायोटी ने छोटी बिजली की कड़क के खुर वाली कटिया और दूसरे कटरों से कहा — "ज़रा ध्यान रखना। यहाँ पर भेड़िये और पहाड़ों वाले शेर हैं जिनको तुम्हारी गन्ध आ सकती है।"

फिर उसने गाना गाया —

हैचा हे, हैचा हो, हैचा हे ये हो

पहली दो रातें तो ठीक से निकल गयीं पर तीसरे दिन जब वे एक ऊँचे दर्रे से गुजर रहे थे तो एक भेड़िया उनको छोटे पाइन के पेड़ों[23] के पीछे से देख रहा था।

रास्ता बहुत चढ़ाई वाला था और एक कटरा पीछे रह गया था। भेड़िया उसके पीछे पीछे आ गया।

छोटी बिजली की कड़क के खुर वाली कटिया ने हवा सूँघने के लिये अपना सिर उठाया तो उसको खतरे की गन्ध आयी तो वह घूमी और पहाड़ी पर नीचे की तरफ भागी।

वह छोटा कटरा पहाड़ी से निकले एक पत्थर के पीछे छिपा हुआ था। छोटी बिजली की कड़क के खुर वाली कटिया ने अपना सिर नीचा किया और अपना खुर ज़ोर से जमीन पर मारा तो भेड़िया घूमा और घूम कर पहाड़ी के नीचे भाग गया।

चलता हुआ कायोटी और कम्बल बाज़ यह सब देख रहे थे। वे भेड़िये के भाग जाने पर एक दूसरे को देख कर मुस्कुराये।

कम्बल बाज़ छोटी बिजली की कड़क के खुर वाली कटिया को गले लगाते हुए बोला — "तुम तो सचमुच में लीडर हो।"

इसके जवाब में छोटी बिजली की कड़क के खुर वाली कटिया ने कम्बल बाज़ के मुँह पर अपनी नाक रगड़ दी। पलट कर फिर

[23] Pine trees – a kind of tall evergreen tree

उसने अपना सिर एक छोटे से कटरे के शरीर से उसको ऊपर ले जाने के लिये रगड़ दिया।

और कई दिन गुजर गये और झुंड ने पहाड़ी के दूसरी तरफ उतरना शुरू कर दिया था। यह रास्ता बहुत पथरीला और ढालू था।

जब वे एक तंग रास्ते से गुजर रह थे तो छोटी बिजली की कड़क के खुर वाली ने कटिया ने अपना खुर पटक कर पलट कर ऊपर की तरफ देखा तो उसको पत्थर गिरने की आवाज आयी। फिर उनके पैरों तले जमीन भी कॉपने लगी।

मैरी चिल्लायी — "अरे यह तो जमीन गिर रही है[24]।"

उसने अपनी बॉहें हिलायीं और सब बछड़ों और बछियों को छोटी बिजली की कड़क के खुर वाली कटिया के पीछे कर दिया जो उनको एक बड़ी चट्टान की तरफ ले कर जा रही थी जहॉ उनको सुरक्षा मिल सकती थी।

कम्बल बाज़ और चलते हुए कायोटी दोनों ने एक एक कटरा पकड़ लिया। ढीली मिट्टी और बड़े बड़े पत्थर ऊपर से नीचे एक नदी के रूप में लुढ़क कर आ रहे थे।

जब सब कुछ शान्त हो गया तो चलते हुए कायोटी ने अपने कटरों को गिना तो उनमें एक बछड़ा नहीं था। वह उस जमीन गिरने में कहीं चला गया था।

[24] Translated for the word "Landslide".

अगर छोटी बिजली की कड़क के खुर वाली कटिया नहीं होती तो शायद और कई कटरे और कटियें भी उसमें चले गये होते।

सेन्ट इगनेशियस मिशन की तरफ चलते हुए कायोटी का दिल दुखी हो गया। वह उन भैंसों से बोला — "हम तुमसे अलग होना नहीं चाहते पर क्या करें हमारा परिवार गरीब है।

हम तुमको काले कपड़े पहने फादर को दे देंगे। वे तुम्हारी बहुत अच्छे से देखभाल करेंगे।"

पर मिशन के पादरी चलते हुए कायोटी के जानवरों को लेना नहीं चाहते थे। यह सुन कर चलता हुआ कायोटी बहुत नाउम्मीद हुआ। वहॉ से चलते हुए कायोटी बोला — "मुझे लगा कि शायद वे समझते होंगे कि भैंसें हमारी आत्मा को कितना मजबूत बनाती हैं।"

मैरी बोली — "तुम फिक न करो। अगर पादरी ने इनको लेने से मना कर दिया तो तुम इतने नाउम्मीद न हो। हम लोग अपने सैलिश लोगों के पास चलते हैं।

हमारे सैलिश लोग जो यहॉ पास में ही रहते हैं इन भैंसों के देख कर बहुत खुश होंगे। वे इनकी देखभाल करने में हमारी सहायता जरूर करेंगे।"

यकीनन, जैसे ही भैंसों के आने की बात उस घाटी में फैली तो वहॉ रहते हुए लोग बहुत खुश हो गये। चलते हुए कायोटी, मैरी और कम्बल बाज़ के लिये एक दावत का इन्तजाम किया गया।

सैलिश का सरदार बोला — "हम बड़े खुशकिस्मत हैं कि हमारा भाई और उसका परिवार हमारे लिये भेंट ले कर आया है।"

चलते हुए कायोटी और उसके परिवार के लिये ज़िन्दगी आसान नहीं थी। बदलते मौसम के साथ भैंसों के झुंड को घास चराने के लिये इस घास के मैदान से उस घास के मैदान तक ले कर जाना उनका सारा समय और ताकत ले लेता था।

एक जाड़ा आया और फिर दूसरा। सब कटरे और कटियें बड़े हो गये थे। जब तीसरा वसन्त आया तो छोटी बिजली की कड़क के खुर वाली कटिया और तीन दूसरी भैंसों ने बच्चे दिये। भैंसें अब आजादी से घूमती थीं।

चलता हुआ कायोटी अपने झुंड को हर साल बढ़ता हुआ देख कर बहुत खुश था। उसका अपना परिवार भी बढ़ रहा था। उसके और मैरी के तीन लड़कियॉ और हो गयी थीं।

वे सालों साल बहुत मेहनत से काम करते रहे थे पर फिर भी वे बहुत गरीब थे। अब **1884** आ गया था।

एक दिन चलते हुए कायोटी ने कहा — "मेरे भैंस बच्चों, अब हमें तुम्हारी सहायता की जरूरत है। काश हमें कोई और मिल जाता जिसको यह याद होता कि वे दिन कितने सुन्दर थे जब सारे मैदान भैंसों से भरे रहते थे।"

माइकल पावला[25] एक ऐसा आदमी था जिसको वे दिन याद थे जब सारे मैदान भैंसों से भरे रहते थे। माइकल का पिता मैक्सिको का रहने वाला था और उसकी मॉ एक पीगन इन्डियन[26] थी। वह इस घाटी में काम करने के लिये बहुत साल पहले आया था और अब एक बहुत अमीर आदमी बन गया था।

जब वह गॉवों में जाता तो वह अक्सर चलते हुए कायोटी के भैंसों के झुंड को देखता तो उसको देखते ही उसका दिल बहुत खुश हो जाता।

सो एक दिन वह चलते हुए कायोटी के पास गया और बोला — "मुझे तुम्हारा भैंसों को वापस लाने वाला यह सपना बहुत पसन्द है। हमारी घाटी ऐसे झुंड के लिये बहुत ही अच्छी है।

वहॉ बहुत बड़े बड़े घास के मैदान हैं, जाड़ों के तूफान से बचने के लिये अच्छी जगहें हैं और बहुत सारे इन्डियन लोग हैं जो इन जानवरों को बहुत प्यार करते हैं। मैं तुम्हारे इस झुंड को खरीदना चाहता हूॅ।"

चलते हुए कायोटी के लिये उन भैंसों से अलग रहना बहुत मुश्किल काम था क्योंकि वे उसके परिवार के साथ कितने समय से रह रही थीं। पर आखीर में उसने हॉ में अपना सिर हिला ही दिया।

---

[25] Michael Pablo

[26] Piegan Indian – or "original people" is the collective name of three First Nation band governments in the provinces of Saskatchewan, Alberta, and British Columbia, Canada and one Native American tribe in Montana, USA. The Siksika ("Blackfoot"), the Kainai or Kainah ("Many Chiefs"), and the Northern Piegan or Peigan or Piikani ("Poor Robes") reside in Canada; the Southern Piegan or Pikuni are located in the USA.

चलता हुआ कायोटी बोला — "मेरे दोस्त, मैं तुमको अपने बच्चे तुम्हारे भरोसे पर देता हूँ।" और इस तरह यह सौदा हो गया।

और इस तरह चलते हुए कायोटी और उसके परिवार ने छोटी बिजली की कड़क के खुर वाली और दूसरी भैंसें माइकल पाबलो को दे दीं। फ्लैटहैड नदी[27] के पास पहाड़ों की छाया में उन भैंसों को बड़ा सुन्दर घर मिल गया।

उसके बाद माइकल पाबलो ने चार्ल्स ऐलर्ड[28] से साझेदारी कर ली क्योंकि उसको भी भैसों का समय याद था। अब पाबलो ऐलर्ड का झुंड सैंकड़ों में बढ़ गया था।

सैलिश लोगों को उस झुंड पर बड़ा घमंड था और इससे उनकी आत्मा को बहुत ताकत मिलती थी क्योंकि यह उनको उस समय की याद दिलाता था जब वे और भैंसें सब एक साथ एक ही जमीन पर रहते थे।

जब भी वे घाटी में भैंसों के खुरों की आवाजें सुनते तो उनको यह गाना सुनायी पड़ता –

हैचा हे, हैचा हो, हैचा हे ये हो

[27] Flathead River is in North-Western side of the USA in its Montana State. It originates in the Canadian Rockies to the North of Glacier National Park and flows South-West into Flathead Lake and then empties into Clark Fork in the Province of British Columbia of Canada.

[28] Charles Allard

4 भैंस स्त्री – जादू की कहानी[29]

भैंस की एक और लोक कथा। यह लोक कथा उत्तरी अमेरिका महाद्वीप के रहने वाले आदिवासी कैडो लोगों की लोक कथाओं से ली गयी है।

कैडो गॉव के लोगों के डाक्टर बर्फ के चिड़े के एक बेटा था। कुछ बड़ा होने पर उसका नाम रखा गया। बर्फ के चिड़े ने उसका नाम वीरता रख दिया क्योंकि वह बड़ा वीर तथा साहसी था।

कैडो गॉव की बहुत सारी लड़कियॉ उससे शादी करना चाहती थीं पर वह था कि किसी की तरफ भी ध्यान ही नहीं देता था।

एक दिन वह शिकार के लिये निकला तो उसने सामने एक पेड़ के नीचे किसी को बैठे हुए देखा। पास जा कर देखा तो वहॉ एक लड़की बैठी हुई थी।

वह उसको देख कर वापस जाने लगा तो उस लड़की ने उसे बड़ी मीठी सी आवाज में पुकारा — "यहॉ आओ।" वीरता उसके पास गया तो उसने देखा कि वह लड़की बहुत छोटी और बहुत सुन्दर थी।

लड़की बोली — "मुझे मालूम था कि तुम यहॉ आओगे इसी लिये मैं तुमसे मिलने के लिये यहॉ चली आयी।"

[29] Buffalo Woman – a folktale from Caddo Tribe from Native Indians, America, North America.

वीरता बोला — "तुम हमारी जैसी तो नहीं हो, तुमने कैसे जाना कि मैं यहॉ आऊॅगा।"

लड़की बोली — "मैं भैंस स्त्री हूॅ। मैंने पहले कई बार तुमको दूर से देखा है। मैं चाहती हूॅ कि तुम मुझे अपने घर ले चलो और मुझे अपने साथ रखो।"

वीरता बोला — "मैं तुमको अपने घर ले जा तो सकता हूॅ परन्तु मेरे साथ रहने के लिये तुमको पहले मेरे माता पिता से पूछना पड़ेगा।" लड़की बोली ठीक है और वीरता उसको अपने घर ले गया।

वहॉ पहुॅच कर लड़की ने उसके माता पिता से पूछा कि क्या वह वीरता के साथ शादी कर के वहॉ रह सकती है। वीरता के माता पिता ने कहा कि अगर वीरता ऐसा करना चाहे तो वह ऐसा कर सकता है। उन्हें कोई ऐतराज नहीं है।

सो वीरता और उस भैंस स्त्री दोनों की कैडो जाति के रीति रिवाजों से शादी हो गयी। बहुत दिनों तक वे सुख से रहे।

एक दिन वह स्त्री बोली — "वीरता, क्या जैसा मैं कहूॅ वैसा तुम करोगे?"

वीरता बोला — "हॉ करूॅगा यदि तुमने कोई ऐसी वैसी बात नहीं कही तो।"

वह स्त्री बोली — "मैं चाहती हूॅ कि तुम मेरे लोगों से भी मिलो।"

वीरता बोला — "ठीक है।"

और दोनों उस भैंस स्त्री के घर चल दिये।

चलते चलते वे एक पहाड़ी पर आये तो स्त्री ने यकायक वीरता को याद दिलाया — "तुमने कहा था कि मैं जो कुछ कहूँगी वह तुम करोगे।"

वीरता बोला — "हॉ बिल्कुल।"।

स्त्री बोली — "मेरा घर इस पहाड़ी के उस पार है। जब मैं अपनी मॉ के पास पहुचूँगी तो मैं तुमको बता दूँगी। वहॉ कुछ आदमी भी आयेंगे जो तुमको भड़काने की कोशिश करेंगे पर तुम किसी पर भी नाराज न होना। कुछ लोग तुमको मारने की भी कोशिश कर सकते हैं।"

वीरता ने पूछा — "मगर वे ऐसा क्यों करेंगे?"

इस पर वह बोली — "अब तुम वह सुनो जो मैं तुम्हें बताने जा रही हूँ। तुम्हारे मुझे जानने से पहले से ही मैं तुमको जानती थी। वास्तव में मैंने अपने जादू के ज़ोर से ही उस दिन तुमको अपने पास बुलाया था।

गुस्सा होने के लिये मैंने तुमको इसलिये मना किया है क्योंकि अगर तुम गुस्सा होगे तो बहुत सारे लोग मिल कर तुमसे लड़ेंगे और तुम्हें मार डालेंगे। वे तुमसे जलेंगे क्योंकि उनमें से कई लोगों से मैंने शादी करने से मना कर दिया था।"

वीरता बोला — "पर अब तो तुम मेरी पत्नी हो।"

वह स्त्री बोली — "हॉ, वहॉ जा कर तुम्हें जो कुछ करना है वह मैंने तुमको बता दिया। अब तुम जमीन पर लेट कर दो बार लुढ़क जाओ।"

वीरता उसकी ओर देख कर मुस्कुराया और जैसा उसकी पत्नी ने कहा था उसने वैसा ही किया। जब वह दो बार लुढ़क कर खड़ा हुआ तो वह एक भैंस बन चुका था। उधर वह स्त्री भी दो बार लुढ़क कर भैंस बन चुकी थी।

अब वह स्त्री वीरता को पहाड़ की चोटी पर ले गयी और नीचे सैंकड़ों भैंसों को दिखा कर बोली — "देखो, ये सब मेरे आदमी हैं, और यह मेरा घर है।"

जब सबसे पास वाले भैंसों के झुंड ने उनको आते देखा तो वह वहीं खड़ा हो गया पर बाद में वे उस स्त्री के घर पहुँच गये। वहॉ वे दो महीने रहे। अक्सर कुछ भैंसे आ कर वीरता के गुस्से को जगाने की कोशिश करते परन्तु वीरता उनकी बात सुनी अनसुनी कर देता।

एक रात वह स्त्री बोली — "अब हम अपने घर वापस जायेंगे।"

और वे दोनों पहाड़ी पर निकल गये और वहॉ आये जहॉ वे भैंसों में बदले थे। वहॉ आ कर वे जमीन पर फिर से दो बार लुढ़के और आदमी और स्त्री बन गये।

उस स्त्री ने फिर कहा — " याद रखना, इस जादू के बारे में तुम किसी को नहीं बताना नहीं तो हमारा बहुत नुकसान हो जायेगा।"

वे लोग वीरता के घर में फिर से एक साल रहे। एक साल बाद उस स्त्री ने कहा कि वह अपने माता पिता के घर फिर जाना चाहती है सो वे दोनों फिर से उस स्त्री के घर चले गये।

वहॉ जा कर उसने वीरता को बताया कि कुछ भैंसे उससे दौड़ का मुकाबला करना चाहते हैं और यदि उसने उनको न हराया तो वे उसको मार देंगे।

उस रात वीरता को नींद नहीं आयी। वह रात में घूमने निकल गया। वह अमावस्या की रात थी। कुछ भी दिखायी नहीं दे रहा था पर वह वहॉ चलती हुई हवा महसूस कर रहा था।

हवा उसके कानों में फुसफुसायी — "तुम अभी जवान हो, ताकतवर हो परन्तु मेरी सहायता के बिना तुम उन भैंसों को नहीं हरा सकते और अगर तुम हार गये तो वे तुम्हें मार डालेंगे और अगर तुम जीत गये तो फिर वे कभी तुमको दौड़ के लिये नहीं ललकारेंगे।"

वीरता ने पूछा — "पर मैं अपना जीवन और अपनी सुन्दर पत्नी को बचाने के लिये क्या करूॅ?"

तब हवा ने वीरता को दो चीज़ें दीं - एक तो जादुई जड़ी बूटी और दूसरी जादू की मिट्टी, और बोली — "दौड़ में जब भैसें तुम्हारे

पास आ जायें तो पहले तुम अपने पीछे की तरफ यह जड़ी बूटी फेंक देना और अगर वे दोबारा तुम्हारे पास तक आ जायें तो उनके ऊपर यह सूखी मिट्टी फेंक देना।"

वीरता वे दोनों चीज़ें ले कर घर वापस आ गया और सो गया। अगले दिन दौड़ शुरू हुई। पहले तो वीरता बड़ी तेज़ी से दौड़ा पर जल्दी ही दूसरे भैंसे उससे आगे निकलने लगे। उसने तुरन्त ही हवा की दी हुई जादू की जड़ी बूटी पीछे की तरफ फेंक दी।

इस समय उसे ऐसा लग रहा था कि जैसे वह बहुत थक गया था और अब और नहीं दौड़ सकता था।

उसने पीछे मुड़ कर देखा कि एक भैंसा अपना सिर पकड़े बड़ी तेज़ी से भागता चला आ रहा था। जैसे ही वह उसके पास तक आया वीरता ने तुरन्त ही वह जादुई मिट्टी भी पीछे की तरफ फेंक दी।

वह तुरन्त ही उन भैंसों से फिर से काफी आगे निकल गया परन्तु हवा की दी हुई दोनों ही चीज़ें उसने खर्च कर डाली थीं। वह अपनी दौड़ खत्म होने वाली लाइन के पास पहुँचने ही वाला था कि उसने उन भैंसों के पैरों की आवाजें फिर से सुनी।

इसी समय उसके मुँह पर हवा का एक तेज झोंका लगा जिससे बहुत सारी धूल उड़ी और उस धूल की वजह से पीछे वाले भैंसें पीछे ही रह गये और वीरता ने वह दौड़ जीत ली।

उसके बाद किसी ने उसको कुछ नहीं कहा और वीरता और उसकी पत्नी दोनों वहॉ आराम से रहे। कुछ दिन उस स्त्री के घर रहने के बाद वे दोनों फिर से वीरता के घर आ गये।

वहॉ आ कर उस स्त्री ने एक सुन्दर पुत्र को जन्म दिया। उन्होंने उसका नाम भैंस लड़का[30] रख दिया।

एक दिन जब वह स्त्री खाना बना रही थी तो वह लड़का बाहर खेलने गया हुआ था। वहॉ उसने अपने साथियों के साथ बहुत सारे खेल खेले और फिर एक ऐसा खेल खेला जिसमें वे सब भैंस बने।

उनमें से कुछ बच्चे भैंसों की तरह जमीन पर लुढ़के भी। पर क्योंकि वे सामान्य बच्चे थे और वे तो केवल नकल कर रहे थे सो उनको तो कुछ नहीं हुआ। पर जब वह भैंस लड़का लुढ़का और वह लड़का दो बार लुढ़का तो वह असली भैंस का बच्चा बन गया।

दूसरे बच्चे यह देख कर डर गये और अपने अपने घरों को भाग गये।

इसी समय उस भैंस लड़के की मॉ उसे ढूँढती हुई आ गयी तो उसने देखा कि दूसरे बच्चे अपने अपने घरों की तरफ भागे जा रहे हैं तो वह समझ गयी कि जरूर कुछ गड़बड़ है।

तभी उसको अपना बेटा भैंस की शक्ल में दिखायी दिया। उसको गोद में उठा कर वह भी वहॉ से भाग ली। कुछ दूर जा कर

[30] Buffalo Boy

उसने अपने आपको भी भैंस में बदल लिया और पश्चिम की तरफ चल दी।

शाम को वीरता जब घर वापस आया तो न तो उसे अपनी पत्नी दिखायी दी और न ही उसे अपना बेटा। बाहर बच्चों से पूछने पर पता चला कि वे भैंसों का एक खेल खेल रहे थे और जादू से उस का बेटा भैंस बन गया।

पहले तो वीरता को इस बात पर विश्वास ही नहीं हुआ पर बाद में उसको ध्यान आया कि वह ज़रूर ही दो बार ज़मीन पर लुढ़क गया होगा और भैंस बन गया होगा।

तब उसको लगा कि वह सब तो सच हो सकता था। उसने उन दोनों को ढूँढने की बहुत कोशिश की परन्तु वे दोनों उसको फिर कभी नहीं मिले।

5 नीले निशान वाला आदमी[31]

भैंस की यह लोक कथा उत्तरी अमेरिका में रहने वाली आदिवासी जातियों में से ब्लड इन्डियन्स जनजाति में कही सुनी जाती है।

ब्लड इंडियन्स[32] उत्तरी अमेरिका के रेड इन्डियन्स में सबसे अधिक ताकतवर और गुस्से वाले लोग हैं। रेड इन्डियन्स की रैवन[33] आदि की कहानियॉ तो दुनियॉ बनाने से सम्बन्धित हैं परन्तु इन ब्लड इन्डियन्स की कहानियॉ साधारण प्रकार की कहानियॉ हैं।

लगता है कि इन लोगों के यहॉ चार नम्बर बड़ा पवित्र माना जाता है जैसे तीन नम्बर भारतीय और यूरोपियन लोगों में पवित्र समझा जाता है। इस कहानी में भैंस का कटरा[34] चार बार नाचता है और आदमी की मॉ भी चार बार कहती है कि "ओ नीले निशान वाले, यह तेरा धुऑ है।"

तो लो पढ़ो कैनेडा के मूल निवासियों की यह लोक कथा —

एक बार की बात है कि एक आदमी कहीं जा रहा था कि उसको एक भैंस कीचड़ में फॅसी दिखायी दे गयी। उसको उस भैंस पर दया आ गयी।

---

[31] Man With Blue Mark – a folktale of Canada, Northern America.

[32] Blood Indians are one of the tribes of Native Indians of North America

[33] Read "Raven Ki Lok Kathayen-1", Bhopal, Indra Publishing House. 2016. 116 p; and "Raven Ki Lok Kathayen" , Delhi, Prabhat Prakashan. 2019

[34] The son of buffalo is called Kataraa in Hindi.

पास में ही उसको एक डंडा पड़ा दिखायी दे गया तो उसने उस डंडे से उस भैंस को कोंचना शुरू कर दिया। कुछ पल बाद ही वह भैंस कूदी और उस कीचड़ से बाहर निकल गयी।

आदमी यह देख कर बहुत खुश हुआ कि वह भैंस की सहायता कर सका। भैंस को निकाल कर आदमी अपने रास्ते चला गया और भैंस अपने रास्ते चली गयी।

इस बात को काफी समय बीत गया। वसन्त आया। सभी भैंसों ने अपने अपने बच्चों को जन्म दिया। उस भैंस ने भी एक कटरे को जन्म दिया जो कीचड़ में फॅस गयी थी।

यह कटरा जब थोड़ा बड़ा हुआ तो अपने साथी कटरों के साथ खेलने लगा। पर दूसरे कटरे अपने छोटे छोटे सींग मार कर उसको छेड़ते और कहते — "तू भैंस का बच्चा नहीं है। तू तो आदमी का बच्चा है।"

कटरे ने जा कर यह सब अपनी मॉ से कहा तो उसकी मॉ ने कहा — "अगर ऐसी बात है तो हम तुम्हारे पिता की तलाश करेंगे।" और दोनों मॉ बेटे उस कटरे के पिता को ढूँढने निकल पड़े।

काफी दिनों तक इधर उधर घूमते रहने के बाद वे एक घाटी में बसे एक गॉव में आये। उस कटरे ने आदमी का रूप रख कर उस गॉव के बच्चों के साथ खेलना शुरू कर दिया। दिन भर वह उनके

साथ खेलता और शाम को वह पास के पेड़ों के एक झुंड की तरफ चला जाता।

गॉव में किसी को भी यह पता नहीं था कि वह बच्चा कौन है, कहॉ से आता है और कहॉ चला जाता है। एक आदमी की उस बच्चे के बारे में जानने की इच्छा हुई तो उसने बच्चों से उस बच्चे से उसके बारे में पूछने के लिये कहा।

अगले दिन जब वह बच्चा आया तो दूसरे बच्चों ने उस बच्चे से पूछा — "तुम इधर उधर क्यों घूमते रहते हो?"

बच्चे ने जवाब दिया — "मैं अपने पिता को खोज रहा हूॅ।"

लोगों ने कहा कि यदि ऐसा है तो हमें उसको सब घरों में ले कर जाना चाहिये ताकि वह अपने पिता को पहचान सके।

एक शाम उन लोगों ने गॉव के सभी शादीशुदा आदमियों को एक जगह इकट्ठा किया और उस लड़के को बुला कर पूछा — "बोलो बेटे, इनमें से तुम्हारा पिता कौन है?"

लड़के ने सबकी तरफ देख कर कहा — "कोई नहीं।"

फिर गॉव के सभी कुॅआरे आदमियों को इकट्ठा किया गया और तब उस लड़के से पूछा गया — "अब बताओ बेटे, क्या इनमें से कोई तुम्हारा पिता है?"

लड़के ने अबकी बार चारों ओर देख कर एक आदमी की तरफ इशारा कर के कहा — "जी यह हैं मेरे पिता।"

वहॉ आये हुए सभी लोगों को खाना खिलाया गया। उस आदमी की थाली में जिसकी तरफ उस बच्चे ने इशारा किया था अधिक खाना परोसा गया ताकि वह अपने बेटे को अपने साथ खाना खिला सके।

वह लड़का उस आदमी के पास बैठा हुआ था और वह आदमी यह सोच रहा था कि वह लड़का उसके पास क्यों बैठा हुआ था।

जब सब लोग खाना खा चुके तो वे सभी वहॉ से चल दिये। लड़का उस आदमी से बोला — "आइये, आप मेरे साथ आइये।"

और वह लड़का उस आदमी को गॉव के बाहर ले जा कर बोला — "मैं अपने पिता को ढूँढ रहा था सो आज वह मुझे मिल गये। आप ही हैं मेरे पिता।"

वह आदमी तो यह सुन कर वह आदमी हक्का बक्का रह गया। उसने सोचा कि मैं तो किसी स्त्री को जानता तक नहीं फिर मेरा यह बच्चा कहॉ से आ गया।

इस आदमी के चेहरे पर एक नीला निशान था। उसने ध्यान से देखा तो उसको वैसा ही एक नीला निशान उस लड़के के चेहरे पर भी दिखायी दिया।

पर इससे उसकी यह गुत्थी अभी भी नहीं सुलझी कि जब वह किसी स्त्री को जानता तक नहीं था तो फिर यह लड़का उसका कैसे हुआ।

लड़का फिर बोला — "देखिये, मैं अपनी मॉ को लाने जा रहा हूँ। वह आपको देखते ही आपको मारने दौड़ेगी पर आप डरियेगा नहीं बस आप उसके दोनों सींग पकड़ लीजियेगा। आइये आप ज़रा इस खुली जगह में आ जाइये।"

वह आदमी खुली जगह की तरफ बढ़ा ही था कि इतने में ही उस बच्चे की मॉ भैंस आ गयी और उस आदमी को मारने दौड़ी।

आदमी को लड़के की बात याद आ गयी और उसने निडर हो कर उस भैंस के दोनों सींग पकड़ लिये। आश्चर्य, सींग पकड़ते ही वह भैंस गायब हो गयी और उसके सामने एक सुन्दर स्त्री खड़ी थी।

तब उस स्त्री ने उस आदमी को सारी कहानी सुनायी और उसको बताया कि देखो इस लड़के का चेहरा तुम्हारे जैसा ही है। अब उस आदमी की कुछ कुछ समझ में आ रहा था कि यह सब कैसे हुआ होगा। वह उन दोनों को घर ले आया। काफी दिनों तक वे साथ साथ रहे।

उस आदमी के पास दो चिड़ियॉ थीं – एक कौआ और एक मैना[35]। दोनों चिड़ियें उस लड़के के दोनों कंधों पर बैठ कर उसके साथ खूब खेलती थीं।

एक दिन उस स्त्री ने उस आदमी को बताया — "तुम मुझे किसी भी चीज़ से मार सकते हो, पीट सकते हो पर न तो मुझे कभी

[35] One was a crow and the other was a magpie. See the picture of the magpie above.

किसी नुकीली चीज़ से मारना और न मेरे ऊपर कभी राख फेंकना।"

आदमी ने कहा "ठीक है।" इस बीच उस आदमी के माता पिता भी उस बच्चे को बहुत प्यार करने लगे थे।

एक दिन वह आदमी अपनी पत्नी से किसी बात पर बहुत नाराज हो गया। उसने चूल्हे से एक जलती हुई लकड़ी उठायी और उससे उस स्त्री को डराना चाहा।

स्त्री और उसके बेटे ने जब वह लकड़ी देखी तो दोनों डर के मारे बाहर की तरफ भागे। वह आदमी भी उनके पीछे पीछे भागा परन्तु तब तक वे दोनों भैंस और कटरे में बदल चुके थे और दोनों ही वहॉ से जंगल की तरफ भाग गये थे।

लड़के के दादी और बाबा अपने पोते को इधर उधर ढूँढ रहे थे। कौआ और मैना भी उस लड़के को उड़ उड़ कर इधर उधर ढूँढने की कोशिश कर रहे थे। पर वह तो उनको न मिलना था न मिला।

उस आदमी की मॉ रो कर बोली — "तुमने जरूर ही मेरे पोते के साथ कुछ बुरा किया है। जब तुम्हारी पत्नी ने पहले से तुमको कह रखा था कि उसको कभी नुकीली चीज़ से नहीं मारना तो तुम उसको जलती हुई लकड़ी से मारने क्यों दौड़े? वह जादू जानती थी पर तुम नहीं माने और देखो अब वे दोनों ही चले गये।"

इस पर वह आदमी बोला — "अच्छा मॉ तुम परेशान मत हो मैं उन दोनों को ढूँढने की कोशिश करता हूँ। अगर मैं कुछ समय तक न लौटूँ तो मेरी चिड़ियों को मेरे पीछे भेज देना।

और अगर वे मेरी कोई छोटी से छोटी चीज़ भी ले आयें तो मेरे बिछौने पर रख कर उसको ढक देना और अपने पाइप में तम्बाकू जला कर उसका धुँआ मेरी उस चीज़ की तरफ उड़ा कर चार बार कहना — "ओ नीले निशान वाले, यह तेरा धुँआ है।" यह कह कर वह आदमी वहॉ से चला गया।

काफी समय इधर उधर घूमने के बाद उसको भैंसों का एक बड़ा सा झुंड दिखायी दिया। ध्यान से देखने पर उसको लगा कि उनमें से एक भैंस अपने कटरे के साथ दूसरी भैंसों से कुछ अलग सी अकेली बैठी है। उसे लगा कि शायद वही उसकी पत्नी और लड़का है।

उसने भैंस का गोबर अपने शरीर पर लपेट लिया और भैंसों के पानी पीने की जगह पर एक गड्ढे में छिप कर बैठ गया।

पहले सारी भैंसें पानी पीने आयीं फिर उनके बच्चे पानी पीने आये। बस उसने अपने वाले बच्चे को पकड़ लिया।

बच्चा अपने पिता को देख कर बहुत खुश हुआ और बोला — "मैं अपनी मॉ को जा कर बताता हूँ।"

वह दौड़ा दौड़ा अपनी मॉ के पास गया और जा कर उससे बोला — "मॉ, पिता जी आ गये।"

भैंस उसके पास आयी तो वह बोला — "मैं तुम्हें लेने आया हूँ।"

भैंस बोली — "मुझे अपने सरदार से पूछ लेने दो। अगर वह हाँ कह देगा तभी मैं तुम्हारे साथ जाऊँगी। तुमने हमारे साथ अच्छा नहीं किया। हम लोग राख और चाकू से बहुत डरते हैं। तुमने सचमुच ही हमारे साथ बहुत ही बुरा किया है।"

वह बछड़ा उस समूह के सरदार के पास गया, उसने उससे कुछ बात की और वापस आ कर बोला — "सरदार कहते हैं कि एक नाच होगा जो चार बार होगा और अगर चारों बार आपने मुझे पहचान लिया तो हम सब अपने घर वापस जा सकते हैं।"

जब भैंसों के सारे बच्चे नाच के लिये इकट्ठा हुए तो उस आदमी का बेटा अपने पिता से बोला — "पहली बार मैं अपनी पूँछ मोड़ कर नाचूँगा। दूसरी बार मैं अपने आगे वाले पैरों में से एक पैर उठा कर नाचूँगा।

तीसरी बार मैं अपने दोनों कान नीचे कर के नाचूँगा और चौथी बार मैं अपनी आँखें बन्द कर के नाचूँगा। बस इसी तरीके से आप मुझे पहचान लीजियेगा।"

तीन बार तो उस आदमी ने अपने बेटे को पहचान लिया परन्तु चौथी बार में सभी बच्चों ने अपनी आँखें बन्द कर लीं इससे वह उसको नहीं पहचान सका।

सारे बच्चे उस आदमी के ऊपर दौड़ पड़े और उसको कुचल कुचल कर मार डाला। जब उसके शरीर का कोई भी हिस्सा नहीं बचा तो वे सब वहॉ से चले गये।

उधर काफी दिन के बाद भी जब वह आदमी घर वापस नहीं लौटा तो उसकी मॉ ने उसकी चिड़ियों को छोड़ दिया। कुछ समय बाद वे उसके मॉस का एक टुकड़ा ले कर घर वापस लौट आयीं।

मॉ ने अपने बेटे के कहे अनुसार उसके मॉस के टुकड़े को उसके बिछौने में रख कर उसको ढक दिया और पाइप से तम्बाकू जलाते हुए धुॅआ उसकी ओर उड़ाते हुए बोली — "ओ नीले निशान वाले, यह तेरा धुॅआ है।" ऐसा उसने 4 बार कहा।

मॉ के ऐसा कहते ही वह आदमी तुरन्त ही अपने बिछौने में से बाहर निकल आया और बोला — "मॉ, मुझे दुख है कि मैं तेरे लिये कुछ भी नहीं कर पाया। मैं तेरे पोते को वापस नहीं ला सका।"

6 भूरे पंखों वाला बड़े साइज़ का आदमी[36]

यह बहुत पहले की बात है जब ब्लैकफीट इन्डियन्स[37] कैनेडा के मैदानों में रहा करते थे तो उस जगह में एक बार बहुत ज़ोर का अकाल पड़ा। महीनों हो गये थे कोई भैंसा ही नहीं मारा गया था और किसी भी कीमत पर किसी तरह का कोई मॉस नहीं मिल रहा था।

एक तरफ बूढ़े लोग एक एक कर के मरने लगे थे क्योंकि उनको ठीक से खाना ही नहीं मिल रहा था। दूसरी तरफ बच्चे जल्दी मर रहे थे क्योंकि उनको भी खाना ठीक से नहीं मिल रहा था। इस तरह चारों तरफ दुख ही दुख था।

केवल ताकतवर योद्धा और मजबूत स्त्रियॉ हीं ज़िन्दा थे। पर वे भी बस कुछ ही दिन और ज़िन्दा थे क्योंकि भूख उन पर भी अपना असर डाल रही थी।

आखिर जाति के सरदार ने इन्डियन्स के सरदारों के सरदार से प्रार्थना की कि ओ बड़े सरदार यहॉ हमारे राज्य में आओ और लोगों को आ कर यह बताओ कि वे इस हालात में कैसे रहें।

[36] The Giant With Grey Feathers. From the book “Canadian Fairy Tales”, by Cyrus MacMillan. 1922. Book available at the Web Site : https://fairytalez.com/author/canadian-fairy-tales/

[37] Blackfeet Indians – a tribe of Indians

बड़ा सरदार उस समय दूर दक्षिण देश में किन्हीं दूसरे कामों में उलझा हुआ था। वह वहॉ अच्छी लगने वाली गर्म हवाऐं चलवा रहा था और फूल खिलवा रहा था।

पर एक रात उसने हवा के मुॅह से सरदार की प्रार्थना सुन ली सो वह जल्दी ही उत्तर की तरफ दौड़ पड़ा। क्योंकि उसको मालूम था कि इस समय उसके लोगों को उसकी सख्त जरूरत थी।

जल्दी ही वह भूखे लोगों के शहर में आ पहुॅचा और चिल्ला कर उनसे पूछा — "किसने पुकारा मुझे।"

सरदार बोला — "जनाब मैंने पुकारा आपको। मेरे लोग मरते जा रहे हैं। अगर आप हमारी सहायता नहीं करेंगे तो ये सब बहुत जल्दी ही मर जायेंगे।"

तब बड़े सरदार ने उन सब लोगों की तरफ देखा तो उसने देखा कि बूढ़े और बच्चे जल्दी जल्दी गायब होते जा रहे थे। केवल कुछ ही छोटे बच्चे रह गये जिनके गाल पिचक गये थे और ऑखें गड्ढों में घुस गयी थीं।

उसको उन पर दया आ गयी। वह उनसे बोला — "यहीं पास में ही एक बड़ा चोर रहता है। वह शायद एक बहुत बड़ा नीच बड़े साइज़ वाला आदमी है। उसने यहॉ से सारी भैंसे बुला कर अपने पास रख ली हैं। पर मैं उसको जल्दी ही ढूॅढ लूॅगा और जल्दी ही तुम लोगों को खाना मिलेगा।"

यह सुन कर लोगों को बहुत तसल्ली मिली क्योंकि उनको मालूम था कि बड़ा सरदार अपने कहे का पक्का है।

फिर बड़े सरदार ने सरदार के नौजवान बेटे को साथ लिया और बड़े साइज़ के आदमी की खोज में निकल पड़ा।

कुछ और लोग भी उसके साथ जाना चाहते थे पर बड़े सरदार ने कहा — "नहीं हम अकेले ही जायेंगे। यह एक बड़ा खतरनाक काम है। अगर जरूरत पड़ी तो इस कोशिश में केवल दो आदमी ही मरेंगे बजाय इसके कि बहुत सारे लोग मरें।"

सो वे लोग उसे ढूँढने के लिये पश्चिम की तरफ घास के मैदान के उस पार ग्रेट वाटर्स की तरफ चल दिये। रास्ते में नौजवान सूरज चॉद और सुबह के तारे की प्रार्थना करता जा रहा था कि वे उनको उनकी यात्रा में कामयाब करें।

बहुत जल्दी ही वे तराई के ढलान पर आ पहुँचे जहॉ मीठी घास और कॅटीले पाइन के पेड़ उगे हुए थे। पर अभी तक उन्हें भैंस दिखायी नहीं दी थीं। आखिर वे एक तंग नाले के पास आ पहुँचे। उसके किनारे उन्होंने एक मकान देखा जिसकी चिमनी में से धुऑ निकल रहा था।

इन सब मुसीबतों की जड़ यह बड़ा सरदार यहीं है। इसी घर में वह भैंस, चोर, बड़े साइज़ का आदमी और उसकी पत्नी रहते हैं। मेरी जादू की ताकत मुझे यह बता रही है कि इन्होंने ही हमारी सारी भैंसे छिपा रखी हैं जिससे सारे घास के मैदान खाली हो गये हैं।

बड़े सरदार के पास एक जादू का पाउडर था जिसकी सहायता से वह खुद तो एक कुत्ता बन गया और अपने साथ आये नौजवान को एक तेज़ नुकीली डंडी में बदल लिया। दोनों वहीं जमीन पर लेट गये और इन्तजार करने लगे।

जल्दी ही वहॉ बड़े साइज़ वाला आदमी उसकी पत्नी और उसका छोटा सा बेटा वहॉ आ गये। बेटे ने कुत्ते को उसके सिर पर थपथपाया और बोला — "पिता जी देखिये यह कितना सुन्दर कुत्ता है। ऐसा लगता है कि यह खो गया है। क्या मैं इसे अपने घर ले जा सकता हूँ।"

उसका पिता बोला — "नहीं नहीं। मुझे तो इसकी शक्ल ही अच्छी नहीं लग रही है। तुम उसे छूना भी नहीं।"

यह सुन कर लड़का ज़ोर ज़ोर से रोने लगा। वह कुत्ता उसको बहुत अच्छा लग रहा था। असल में तो वह बहुत दिनों से चाह रहा था कि वह एक कुत्ता पाले। उसने अपने पिता से उसको घर ले जाने के लिये बहुत जिद की तो पिता ने उसे इजाज़त दे दी — "ठीक है तुम जो चाहो करो पर ख्याल रखना कि इससे कुछ अच्छा नहीं होने वाला।"

लड़के की मॉ ने डंडी उठायी और बोली — "यह डंडी बहुत अच्छी है इस डंडी को मैं ले चलती हूँ। मैं इससे दवाऐं बनाने के लिये जड़ें खोदूँगी।"

उसके बाद सब अपने घर चल दिये।

बड़े साइज़ का आदमी अपनी पत्नी और बेटे दोनों से खुश नहीं था सो वह भुनभुनाता हुआ जा रहा था। लड़का कुत्ते के साथ जा रहा था और उसकी मॉ हाथ में डंडी लिये जा रही थी।

अगली सुबह बड़े साइज़ वाला आदमी बाहर गया और जल्दी ही एक मोटी भैंस ले कर वापस भी आ गया। उसकी खाल निकली हुई थी और वह पकाने के लिये तैयार थी। उन्होंने उसको एक गड्ढे के ऊपर रख कर भूना और सबने बहुत अच्छा खाना खाया।

उस मॉस में से थोड़ा सा मॉस लड़के ने कुत्ते को खिलाया पर जब लड़के के पिता ने यह देखा कि उसका बेटा क्या कर रहा था तो उसको बहुत ज़ोर से मार लगायी और कहा — "क्या मैंने तुमसे नहीं कहा था कि ये कुत्ते ठीक नहीं होते हैं। तुमको मेरी बात माननी चाहिये।"

लड़के की मॉ ने बेटे की तरफ से उसके पिता से विनती की कि वह उसको कुत्ते को खाना खिलाने दे। सो लड़के ने उसको खाना खिला दिया।

उस रात जब सारी दुनियॉ सो गयी तो कुत्ता और डंडी दोनों आदमी के रूप में आ गये और उन्होंने बचा हुआ भैंस का मॉस खूब पेट भर कर खाया। फिर बड़े सरदार ने नौजवान से कहा — "यह बड़े साइज़ का आदमी ही भैस चोर है जो इनको घास के मैदानों में जाने नहीं देता। जब तक हमें यह मालूम न हो जाये कि यह उन्हें रखता कहॉ है तब तक इसको मारना भी बेकार है।"

सो वे फिर से कुत्ते और डंडी के रूप में बदल गये और सोने चले गये।

अगले दिन स्त्री और उसका बेटा उठ कर बैरीज़ इकट्ठा करने के लिये और दवा के लिये जड़ लाने के लिये जंगल चले तो उन्होंने अपने कुत्ते और डंडी को भी साथ ले लिया।

उन्होंने जब कुछ देर काम कर लिया तो दोपहर को वे लोग खाना खाने बैठे। स्त्री ने डंडी बराबर में रख दी और लड़के ने अपना कुत्ता मैदान में छोड़ दिया।

कुत्ता पहाड़ के इधर उधर दौड़ने लगा। दौड़ते दौड़ते उसको पहाड़ की एक गुफा में एक रास्ता दिखायी दे गया। उसने उसमें अन्दर झॉका तो वहॉ उसको बहुत सारी भैंसें दिखायी दे गयीं। अब उसे पता चल गया था कि वह बड़े साइज़ वाला आदमी अपनी भैंसें कहॉ छिपा कर रखता था।

वह वहॉ से स्त्री और लड़के के पास गया और जा कर भौंकने लगा। उसका यह भौंकना उसके साथी के लिये एक इशारा था पर लड़के और उसकी मॉ ने समझा कि वह किसी चिड़िया को देख कर भौंक रहा था। यह देख कर वे दोनों हॅस रहे थे पर वास्तव में वह अपने साथी को बुला रहा था।

डंडी ने यह इशारा समझ लिया था। वह कुत्ते के पास वाली झाड़ी में लड़के और उसकी मॉ की ऑखें बचा कर सॉप की तरह लहरा कर चली गयी। वे दोनों पहाड़ के दूसरी तरफ वाली गुफा में

घुस गये। वहॉ उनको बहुत सारी भैंसे दिखायी दे गयीं। ये सब भैंसे घास के मैदानों से यहॉ ला कर इकट्ठी की गयी थीं।

कुत्ते ने भौंकना और उनकी एड़ियों में काटना शुरू कर दिया। डंडी ने उनको मारना शुरू कर दिया। इस तरह से उन दोनों ने उनको गुफा के बाहर निकाल कर पूर्व की तरफ हॉक दिया। पर वे यह काम कुत्ते और डंडी की शक्ल में ही करते रहे।

जब शाम हुई तो मॉ बेटे ने कुत्ते और डंडी को ढूँढना शुरू किया पर वे दोनों ही उनको कहीं दिखायी नहीं दिये। उनको कुत्ते और डंडी के बिना ही घर वापस जाना पड़ा।

जैसे ही मॉ और बेटा नदी के किनारे अपने घर के पास पहुँचे बड़े साइज़ का आदमी भी घर लौट आया। इत्तफाक से उसने पूर्व की तरफ देखा तो उसने देखा कि बहुत सारी भैंसें तराई की तरफ भागी जा रही हैं जहॉ मीठी घास उगती थी।

यह देख कर वह बहुत गुस्सा हो गया और चिल्ला कर लड़के से बोला — "तुम्हारा कुत्ता कहॉ है।"

लड़का बोला — "पिता जी आज जब हम जंगल गये थे तभी वह वहीं कहीं खो गया। असल में वह एक चिड़िया का पीछा कर रहा था पर फिर वह वापस ही नहीं आया।"

पिता चिल्लाया — "बेवकूफ। वह चिड़िया नहीं थी जिसका वह पीछा कर रहा था। वह मेरी एक भैंस का पीछा कर रहा था। मैंने तुमसे कहा था न कि वह एक बुरी चीज़ है तुम उसे छुओ भी

नहीं पर तुम और तुम्हारी मॉ अपनी के आगे किसी की सुनते कहॉ हो। देखो न अब मेरी सारी भैंसें चली गयीं।"

वह गुस्से के मारे अपने दॉत चबाते हुए गुफा की तरफ यह देखने के लिये भागा कि वहॉ कोई भैंस अभी बाकी बची है क्या। वह भागता जा रहा था और चिल्लाता जा रहा था "बस मुझे वह कुत्ता कहीं दिखायी दे जाये मैं उसे मार दूॅगा।"

जब वह गुफा के पास पहुॅचा तो बड़ा सरदार और नौजवान जो अभी भी कुत्ते और डंडी के रूप में थे वहॉ से आखिरी भैंस को बाहर निकाल रहे थे।

बड़े साइज़ वाले आदमी ने जैसे ही उनको देखा तो वह उसको मारने के लिये भागा। उसने सोचा कि वह कुत्ते को मार देगा और डंडी को तोड़ देगा। उसके उनके पास पहुॅचने से पहले ही वे दोनों उछले और एक भैंस पर चढ़ गये और उसके लम्बे बालों में छिप कर उसको कस कर पकड़ लिया।

कुत्ते ने भैंस के शरीर पर काटा सो वह भैंस चिल्लायी ज़ोर से उछली और गुफा के बाहर की तरफ भाग गयी। वह कूद कूद कर पूर्व की तरफ भागी जा रही थी जब तक कि वह अपने आगे जाने वाली भैंसों के झुंड में नहीं मिल गयी।

बड़े साइज़ वाला आदमी बेचारा गुस्से में अपना सा मुॅह ले कर घर चला गया। उसके बाद कुत्ता और डंडी दोनों अपने अपने रूपों

में आ गये और भैसों के झुंड को हॉकते हुए अपने देश के भूखे लोगों के पास ले गये।

लोग बड़े सरदार और नौजवान को इतनी सारी भैंसों के साथ गॉव लौटता देख कर बहुत खुश हुए। अब उनका अकाल खत्म हो गया था।

पर जैसे ही उन्होंने भैंसों को बाड़े में हॉका तो एक बहुत बड़ी भूरे पंखों वाली चिड़िया उनके सिर के ऊपर से उड़ी और उन पर कूद लगा दी। उसने उनको अपनी चोंच से गोदा और उनको वहॉ से बाहर निकालने की कोशिश की।

बड़े सरदार ने अपने जादू से यह जान लिया कि वह भूरी चिड़िया कोई और नहीं बल्कि वही बड़े साइज़ वाला आदमी था जिसने भैसों को चुराया था। उसने अपने आपको एक भूरे रंग के पखों वाली बड़ी सी चिड़िया में बदल लिया था और उन भैंसों के पीछे पीछे घास के मैदानों तक आ गया था।

बड़े सरदार ने तुरन्त ही अपने आपको एक औटर में बदल लिया और नदी के किनारे मरी हुई जैसी पड़ गयी। भूरी चिड़िया ने उसे देखा तो उसने सोचा कि अरे यह तो मेरे लिये बहुत अच्छा खाना है सो उसने नीचे कूद लगायी।

जैसे ही वह उसके ऊपर से उड़ी कि बड़े सरदार ने उसे उसकी टॉग से पकड़ लिया और अपना रूप बदलते हुए उसको जीत के तौर पर अपने कन्धे पर लादे हुए अपने कैम्प ले आया।

उसने उसको पहले तो अपने तम्बू के धुआँ निकलने वाले पाइप से कस कर बाँध दिया और फिर उसमें नीचे आग लगा दी।

बड़े साइज़ वाला आदमी चिल्लाया — "मेहरबानी कर के मुझे छोड़ दो। मेरी जान बख्श दो। मैं अब तुम्हें कभी कोई नुकसान नहीं पहुँचाऊँगा।"

पर सरदार ने उसको रात भर के लिये वहीं बँधा छोड़ दिया। रात भर काला धुआँ उस तम्बू में भरता रहा और उसके भूरे पंखों को काला करता रहा। सुबह तक उसके सारे पंख काले हो चुके थे।

तब बड़े सरदार ने उसको पाइप से खोल लिया और कहा — "अब तुम जा सकते हो। अबके बाद तुम कभी भी अपनी शक्ल नहीं बदल सकोगे। अबसे तुम रैवन बन जाओगे जो धरती पर अपशकुनी का एक निशान होगे – जाति से निकाले हुए और चिड़ियों में डाकू। तुमको अपना खाना बहुत मेहनत से ढूँढना पड़ेगा और चोरी करना पड़ेगा।

इसी लिये आज तक वह बड़े साइज़ का आदमी रैवन बना हुआ है क्योंकि बड़े सरदार के शाप की वजह से वह अपनी शक्ल फिर से नहीं बदल सका।

उसके सारे पंख भी काले हैं। वह धरती पर एक बदशकुनी का निशान है। उसको खाना भी बड़ी मुश्किल से मिलता है और उसे उसे चोरी से भी पाना पड़ता है।

List of Stories of “Buffalo in Folktales”

1. How the Buffalo Came to Earth
2. White Crow Hides the Animals
3. Buffalo Song
4. The Buffalo Woman
5. Man With Blue Mark
6. The Giant With Grey Feathers

देश विदेश की लोक कथाओं की सीरीज़ में प्रकाशित पुस्तकें —

इस कड़ी में 100 से भी अधिक पुस्तकें उपलब्ध हैं। पुस्तक सूची की पूरी जानकारी के लिये लिखें — hindifolktales@gmail.com

नीचे लिखी हुई पुस्तकें हिन्दी ब्रेल में संसार भर में उन सबको निःशुल्क उपलब्ध है जो हिन्दी ब्रेल पढ़ सकते हैं।

1 नाइजीरिया की लोक कथाऐं–1
2 नाइजीरिया की लोक कथाऐं–2
3 इथियोपिया की लोक कथाऐं–1
4 रैवन की लोक कथाऐं–1

नीचे लिखी हुई पुस्तकें हार्ड कापी में बाजार में उपलब्ध हैं।

1 रैवन की लोक कथाऐं–1 — भोपाल, इन्द्रा पब्लिशिंग हाउस, 2016
2 इथियोपिया की लोक कथाऐं–1 — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2017, 120 पृष्ठ
3 इथियोपिया की लोक कथाऐं–2 — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2017, 120 पृष्ठ
4 शीबा की रानी मकेडा — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2019, 160 पृष्ठ
5 राजा सोलोमन — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2019, 144 पृष्ठ
6 रैवन की लोक कथाऐं — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2020, 176 पृष्ठ
7 बंगाल की लोक कथाऐं — देहली, नेशनल बुक ट्रस्ट, 2020, 213 पृष्ठ

Facebook Group
https://www.facebook.com/groups/hindifolktales/?ref=bookmarks

Updated in 2022

लेखिका के बारे में

सुषमा गुप्ता का जन्म उत्तर प्रदेश के अलीगढ़ शहर में सन् **1943** में हुआ था। इन्होंने आगरा विश्वविद्यालय से समाज शास्त्र और अर्थ शास्त्र में ऐम ए किया और फिर मेरठ विश्वविद्यालय से बी ऐड किया। **1976** में ये नाइजीरिया चली गयीं। वहाँ इन्होंने यूनिवर्सिटी औफ़ इबादान से लाइब्रेरी साइन्स में ऐम ऐल ऐस किया और एक थियोलोजीकल कौलिज में **10** वर्षों तक लाइब्रेरियन का कार्य किया।

वहाँ से फिर ये इथियोपिया चली गयीं और वहाँ एडिस अबाबा यूनिवर्सिटी के इन्स्टीट्यूट औफ़ इथियोपियन स्टडीज़ की लाइब्रेरी में **3** साल कार्य किया। तत्पश्चात इनको दक्षिणी अफ्रीका के एक देश लिसोठो के विश्वविद्यालय में इन्स्टीट्यूट औफ़ सदर्न अफ्रीकन स्टडीज़ में **1** साल कार्य करने का अवसर मिला। वहाँ से **1993** में ये यू ऐस ए आ गयीं जहाँ इन्होंने फिर से मास्टर औफ़ लाइब्रेरी ऐंड इनफौर्मेशन साइन्स किया। फिर **4** साल ओटोमोटिव इन्डस्ट्री एक्शन ग्रुप के पुस्तकालय में कार्य किया।

1998 में इन्होंने सेवा निवृत्ति ले ली और अपनी एक वेब साइट बनायी – www.sushmajee.com। तब से ये उसी वेब साइट पर काम कर रहीं हैं। उस वेब साइट में हिन्दू धर्म के साथ साथ बच्चों के लिये भी काफी सामग्री है।

भिन्न भिन्न देशों में रहने से इनको अपने कार्यकाल में वहाँ की बहुत सारी लोक कथाओं को जानने का अवसर मिला – कुछ पढ़ने से, कुछ लोगों से सुनने से और कुछ ऐसे साधनों से जो केवल इन्हीं को उपलब्ध थे। उन सबको देख कर इनको ऐसा लगा कि ये लोक कथाऐं हिन्दी जानने वाले बच्चों और हिन्दी में रिसर्च करने वालों को तो कभी उपलब्ध ही नहीं हो पायेंगी – हिन्दी की तो बात ही अलग है अंग्रेजी में भी नहीं मिल पायेंगीं।

इसलिये इन्होंने न्यूनतम हिन्दी पढ़ने वालों को ध्यान में रखते हुए उन लोक कथाओं को हिन्दी में लिखना प्रारम्भ किया। इन लोक कथाओं में अफ्रीका, एशिया और दक्षिणी अमेरिका के देशों की लोक कथाओं पर अधिक ध्यान दिया गया है पर उत्तरी अमेरिका और यूरोप के देशों की भी कुछ लोक कथाऐं सम्मिलित कर ली गयी हैं।

अभी तक **2500** से अधिक लोक कथाऐं हिन्दी में लिखी जा चुकी है। इनको "देश विदेश की लोक कथाऐं" और "लोक कथाओं की क्लासिक पुस्तकें" क्रम में प्रकाशित करने का प्रयास किया जा रहा है। आशा है कि इस प्रकाशन के माध्यम से हम इन लोक कथाओं को जन जन तक पहुँचा सकेंगे।

विंडसर, कैनेडा
2022